नवसर्जन संस्कृति

RNI No. GJHIN/25/A2786
NAVSARJAN SANSKRUTI

नवसर्जन संस्कृति

अहमदाबाद से प्रकाशित दैनिक

वर्ष : 01
अंक : 130
दि. 12.02.2026,
गुरुवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

44 साल बाद बीएमसी में भाजपा की वापसी, रितु तावड़े बनीं मुंबई की नई मेयर; शिवसेना के संजय घाड़ी डिप्टी मेयर निर्विरोध निर्वाचित

(जीएनएस)। मुंबई। देश की सबसे संपन्न और राजनीतिक रूप से सबसे प्रभावशाली मानी जाने वाली बृहन्नमुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) में 44 साल बाद भारतीय जनता पार्टी का अपना मेयर बनने के साथ ही एक नया राजनीतिक अध्याय शुरू हो गया है। बुधवार को भाजपा की वरिष्ठ पार्षद रितु तावड़े निर्विरोध मुंबई की नई महापौर चुनी गईं, जबकि शिवसेना (शिंदे गुट) के संजय शंकर घाड़ी उप महापौर निर्वाचित हुए। 227 सदस्यीय सदन में भाजपा-शिवसेना गठबंधन यानी महायुति को स्पष्ट बहुमत मिलने के बाद विपक्ष ने मेयर पद के लिए कोई उम्मीदवार नहीं उतारा, जिसके चलते दोनों पदों पर निर्विरोध निर्वाचन हुआ। बीएमसी मुख्यालय में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह ऐतिहासिक क्षण का साक्षी बना। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस और उप मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे सदन की दीर्घा में मौजूद रहे। जैसे ही मुख्यमंत्री दीर्घा में पहुंचे, भाजपा पार्षदों ने 'देवाभाऊ' के नारों से सदन को गुंजायमान कर दिया। माहौल पूरी तरह उत्सवी और राजनीतिक रूप से प्रतीकात्मक था, क्योंकि 1997 से ठाकरे परिवार के प्रभाव में रही बीएमसी की सत्ता संरचना में यह बड़ा बदलाव माना जा रहा है। मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने इसे ऐतिहासिक क्षण बताते हुए कहा कि हिंदू हृदय सम्राट बालासाहेब ठाकरे की जन्म शताब्दी के अवसर पर मुंबई को वैसा प्रशासन देने का प्रयास किया जाएगा, जिसकी उन्होंने कल्पना की थी। उन्होंने रितु तावड़े को एक अनुभवी और सशक्त मराठी चेहरा बताते हुए कहा कि वह मुंबई के विकास को लेकर हमेशा आक्रामक और प्रतिबद्ध रही हैं। वहीं उप मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने कहा कि मुंबई की जनता ने महायुति को स्पष्ट जनादेश दिया है और यह जीत बालासाहेब ठाकरे के विचारों को आगे बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है।

शपथ लेने के बाद महापौर रितु तावड़े ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'पहला सेवक' मंत्र का उल्लेख करते हुए कहा कि वह मुंबई की 'पहली नागरिक' नहीं बल्कि 'पहली सेवक' बनकर काम करेंगी। उन्होंने

कहा कि मुख्यमंत्री ने मुंबईकरों से वादा किया था कि बीएमसी का मेयर मराठी होगा और आज वह उस वादे की पूर्ति का प्रतीक बनकर सदन में खड़ी हैं। तावड़े ने स्पष्ट किया कि उनका फोकस राजनीति से अधिक सेवा पर रहेगा और प्रशासन को पारदर्शी, जवाबदेह तथा तकनीक आधारित बनाया जाएगा।

घाटकोपर के वार्ड नंबर 132 से निर्वाचित रितु तावड़े का यह तीसरा कार्यकाल है। 2012 में कांग्रेस छोड़कर भाजपा में शामिल हुईं तावड़े ने उसी वर्ष पहली बार पार्षद का चुनाव जीता था। उन्होंने अलग-अलग वार्डों का प्रतिनिधित्व करते हुए अपनी राजनीतिक पकड़ मजबूत की है। वह बीएमसी की शिक्षा समिति की अध्यक्ष भी रह चुकी हैं और वर्तमान में भाजपा महिला मोर्चा की प्रदेश उपाध्यक्ष हैं। मराठा समुदाय से आने के बावजूद गुजराती बहुल क्षेत्रों में भी उनकी मजबूत पकड़ रही है, जिसे उनकी राजनीतिक संतुलन क्षमता के रूप में देखा जाता है। अपने संबोधन में तावड़े ने कहा कि मुंबई को स्वच्छ, सुंदर, सुरक्षित और आधुनिक बनाना उनकी प्राथमिकता होगी। महिला सशक्तिकरण, युवाओं के लिए रोजगार सृजन, वरिष्ठ नागरिकों की देखभाल और गरीबों के लिए प्रभावी योजनाएं लागू करने की दिशा में ठोस कदम उठाए जाएंगे। उन्होंने यह भी घोषणा की कि भ्रष्टाचार मुक्त प्रशासन सुनिश्चित करने के लिए डिजिटल सिस्टम और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का व्यापक उपयोग किया जाएगा, ताकि बीएमसी की कार्यप्रणाली में पारदर्शिता और दक्षता लाई जा सके। उप महापौर बने संजय घाड़ी दहिसर के वार्ड नंबर 5 से नगरसेवक हैं और मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के करीबी सहयोगी माने जाते हैं। मुंबई विश्वविद्यालय से बी.कॉम की डिग्री प्राप्त घाड़ी लंबे समय से शिवसेना की राजनीति से जुड़े रहे हैं। स्थानीय स्तर पर स्वास्थ्य सुविधाओं और आधारभूत ढांचे के विकास में उनकी सक्रिय भूमिका रही है। पद संभालने के बाद उन्होंने 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान और मुंबई की स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार को अपनी प्राथमिकता बताया है।

बीएमसी के इतिहास पर नजर डालें तो 1982-83 में प्रभाकर पई भाजपा के पहले मेयर बने थे। उसके बाद से भाजपा की सहयोगी पार्टियां सत्ता में रही, लेकिन पार्टी का अपना मेयर बनने में 44 वर्षों का लंबा अंतराल रहा। इस लिहाज से रितु तावड़े का निर्वाचन भाजपा के लिए प्रतीकात्मक और राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जा रहा है। बीएमसी न केवल देश की सबसे अमीर नगर निकाय है, बल्कि महाराष्ट्र की राजनीति का केंद्र भी रही है, जहां से राज्य की सत्ता संतुलन की दिशा तय होती रही है।

विपक्ष ने हालांकि इस जीत पर सवाल भी उठाए हैं। शिवसेना (यूबीटी) के नेता संजय राउत ने कटाक्ष करते हुए कहा कि भाजपा को मराठी जनता और मनसे के समर्थन के दबाव में मराठी मेयर चुनना पड़ा। उन्होंने यह भी याद दिलाया कि तावड़े का राजनीतिक सफर कांग्रेस से शुरू हुआ था। हालांकि महायुति के नेताओं का कहना है कि यह जीत मुंबई की जनता के विकास के एजेंडे पर विश्वास का परिणाम है।

अब जब बीएमसी की बागडोर महायुति के हाथ में है, तो मुंबईकरों की नजरें इस नई टीम पर टिकी हैं। उम्मीद की जा रही है कि शहर की आधारभूत समस्याओं—जैसे जलजमाव, ट्रैफिक, प्रदूषण, कचरा प्रबंधन और आवास—पर ठोस और दीर्घकालिक समाधान निकाले जाएंगे। 44 साल बाद भाजपा के अपने मेयर के साथ बीएमसी की सत्ता में आया यह बदलाव आने वाले समय में मुंबई की प्रशासनिक और राजनीतिक दिशा को किस तरह प्रभावित करेगा, यह देखने वाला होगा।

'मौलाना' संग तस्वीर पर सियासी संग्राम, सरमा-खेड़ा आमने-सामने

(जीएनएस)। असम की राजनीति में एक तस्वीर ने नया सियासी तूफान खड़ा कर दिया है। मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा और कांग्रेस नेता पवन खेड़ा के बीच सोशल मीडिया पर शुरू हुई तकरार अब खुली राजनीतिक बहस में बदल गई है। बांग्लादेश से जुड़े एक मौलाना के साथ मुख्यमंत्री की कथित तस्वीर साझा किए जाने के बाद आरोप-प्रत्यारोप का दौर तेज हो गया है, और 2026 के असम विधानसभा चुनाव से पहले यह विवाद भाजपा और कांग्रेस के बीच बढ़ती राजनीतिक गर्माहट का प्रतीक बन गया है। कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट साझा करते हुए दावा किया कि उन्हें ढाका स्थित चिश्तिया सैदिया दरबार शरीफ से जुड़े एक मौलाना के साथ मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा की तस्वीर भेजी गई है। खेड़ा ने आरोप लगाया कि संबंधित मौलाना के पाकिस्तान समर्थक जमात-ए-इस्लामी के नेतृत्व वाले गठबंधन और आलिया मदरसा से संबंध रहे हैं। उन्होंने इस मुलाकात की परिस्थितियों पर सवाल उठाते हुए पूछा कि यदि इसमें कुछ भी संदिग्ध नहीं था, तो इसे सार्वजनिक रूप से पहले क्यों नहीं बताया गया। खेड़ा ने तंज कसते हुए कहा कि यह मामला "तीर का उल्टा लगना" जैसा है और यह भी जोड़ा कि कांग्रेस में रहते

हुए सरमा को भी मौलानाओं से मिलने के लिए कहा जाता था। खेड़ा की इस पोस्ट के बाद मुख्यमंत्री हिमंता बिस्वा सरमा ने तीखी प्रतिक्रिया दी। उन्होंने अपने आधिकारिक 'एक्स' अकाउंट पर जवाब देते हुए कहा कि जिस मौलाना के साथ उनकी तस्वीर साझा की जा रही है, वही मौलाना पूर्व मुख्यमंत्री तरुण गोगोई के कार्यकाल में उनके सरकारी आवास पर आ चुके थे और राज्य कांग्रेस अध्यक्ष गौरव गोगोई से भी मिल चुके थे। सरमा ने लिखा कि पवन खेड़ा सार्वजनिक रूप से उनकी तस्वीर साझा कर रहे हैं, लेकिन उन्हें यह भी बताना चाहिए कि वही व्यक्ति कांग्रेस नेतृत्व से भी मिल चुका है। उन्होंने इसे कांग्रेस का "उल्टा पड़ गया दांव" करार दिया। सरमा ने आगे दावा किया कि कांग्रेस में रहते हुए उन्हें कई बार विभिन्न मौलानाओं और धार्मिक नेताओं से मिलने के लिए कहा जाता था। उन्होंने इसे पार्टी छोड़ने के अपने निर्णय के प्रमुख कारणों में से एक बताया। उल्लेखनीय है कि हिमंता बिस्वा सरमा ने 2015 में वैचारिक मतभेदों का हवाला देते हुए कांग्रेस से इस्तीफा दिया था और बाद में भारतीय जनता पार्टी में शामिल हो गए थे। भाजपा में आने के बाद उन्होंने असम की राजनीति में अपनी अलग पहचान बनाई और 2021 में मुख्यमंत्री पद की शपथ ली। यह विवाद ऐसे समय में सामने आया है जब राज्य में आगामी विधानसभा चुनावों को लेकर राजनीतिक सरगर्मी बढ़ती जा रही है। भाजपा और कांग्रेस दोनों ही एक-दूसरे पर तीखे हमले कर रहे हैं और सोशल मीडिया राजनीतिक रणनीति का प्रमुख मंच बन चुका है। राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि तस्वीरों और व्यक्तिगत आरोपों के माध्यम से मतदाताओं की भावनाओं को प्रभावित करने की कोशिशें चुनावी माहौल को और अधिक ध्रुवीकृत कर सकती हैं।

इस विवाद की पृष्ठभूमि में हाल ही में मुख्यमंत्री सरमा द्वारा कांग्रेस नेता गौरव गोगोई और उनकी पत्नी एलिजाबेथ कोलबर्न गोगोई पर लगाए गए आरोप भी चर्चा में रहे हैं। सरमा ने दावा किया था कि गौरव गोगोई की पत्नी के पाकिस्तान स्थित व्यक्तियों से संबंध हैं। हालांकि गौरव गोगोई ने इन आरोपों को "बेबुनियाद और निराधार" बताते हुए खारिज कर दिया। उन्होंने कहा कि यह राजनीतिक लाभ के लिए किया गया प्रयास है और इसका कोई तथ्यात्मक आधार नहीं है।

मामला यहीं नहीं रुका। मुख्यमंत्री सरमा ने यह भी घोषणा की कि इन कथित संबंधों की जांच के लिए गठित विशेष जांच टीम (एसआईटी) की जांच को एक केंद्रीय एजेंसी को सौंपा जाएगा। इस घोषणा के बाद राजनीतिक माहौल और अधिक गरमा गया। कांग्रेस ने इसे सत्ता का दुरुपयोग बताते हुए आरोप लगाया कि भाजपा विपक्ष को बदनाम करने की कोशिश कर रही है, जबकि भाजपा ने कहा कि राष्ट्रीय सुरक्षा और पारदर्शिता के मुद्दों पर कोई समझौता नहीं किया जाएगा। राजनीतिक पर्यवेक्षकों का मानना है कि असम में धार्मिक और अंतरराष्ट्रीय संपर्कों से जुड़े मुद्दे अत्यंत संवेदनशील होते हैं। ऐसे मामलों में उठाए गए आरोप और प्रत्यारोप चुनावी रणनीति का हिस्सा हो सकते हैं, लेकिन इनका व्यापक सामाजिक प्रभाव भी पड़ सकता है। सोशल मीडिया पर वायरल होने वाली तस्वीरें और पोस्ट अक्सर अधूरी जानकारी के साथ फैलती हैं, जिससे भ्रम और विवाद की स्थिति बन जाती है।

इस पूरे प्रकरण में दोनों पक्ष अपनी-अपनी दलीलों के साथ मजबूती से खड़े दिखाई दे रहे हैं। कांग्रेस का कहना है कि पारदर्शिता और जवाबदेही लोकतंत्र का मूल है, इसलिए मुख्यमंत्री को स्पष्ट करना चाहिए कि संबंधित मुलाकात किन परिस्थितियों में हुई। वहीं भाजपा का तर्क है कि कांग्रेस स्वयं ऐसे व्यक्तियों से संपर्क में रही है और अब राजनीतिक लाभ के लिए मुद्दा उठा रही है। असम की राजनीति में यह नया विवाद आने वाले महीनों में किस दिशा में जाएगा, यह देखना दिलचस्प होगा। फिलहाल इतना स्पष्ट है कि 2026 के चुनाव से पहले सियासी बयानबाजी और आरोप-प्रत्यारोप का दौर और तेज होने वाला है। तस्वीरों से शुरू हुआ यह विवाद अब राजनीतिक रणनीति, वैचारिक मतभेद और व्यक्तिगत आरोपों की जटिल बहस में बदल चुका है, जिसका असर राज्य की चुनावी राजनीति पर पड़ सकता है।

दिल्ली में 16 किलोमीटर के मेट्रो विस्तार को मिली मंजूरी, 13 नए स्टेशन बनेंगे

(जीएनएस)। दिल्ली सरकार ने राजधानी की सार्वजनिक परिवहन व्यवस्था को और अधिक मजबूत, कुशल और आधुनिक बनाने की दिशा में एक बड़ा फैसला लिया है। मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के नेतृत्व में हुई कैबिनेट बैठक में मेट्रो फेज-V (ए) परियोजना को मंजूरी दे दी गई है। इस महत्वाकांक्षी परियोजना के तहत कुल 16 किलोमीटर लंबे तीन नए मेट्रो कॉरिडोर विकसित किए जाएंगे, जिनमें 13 मेट्रो स्टेशन शामिल होंगे। अनुमानित लागत 12,014.91 करोड़ रुपए है, जिसमें दिल्ली सरकार का प्रत्यक्ष योगदान लगभग 2,940.46 करोड़ रुपए तय किया गया है। इस परियोजना को 2028 तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है और इसके पूरा होने से राजधानी में आवाजाही और कनेक्टिविटी दोनों में अभूतपूर्व सुधार आएगा।

स्वीकृत किए गए तीन कॉरिडोर में सबसे व्यापक और प्रारंभिक महत्व वाला है आर. के. आश्रम से इंद्रप्रस्थ तक प्रस्तावित मेट्रो लाइन, जिसका कुल लंबाई 9.913 किलोमीटर है और इस पर 9 स्टेशन बनेंगे। यह लाइन सेंट्रल विस्टा मार्ग से होकर गुजरेगी और दिल्ली के प्रशासनिक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक क्षेत्रों को सीधे मेट्रो नेटवर्क से जोड़ने का काम करेगी। सेंट्रल विस्टा कॉरिडोर न केवल मुख्य सरकारी भवनों को जोड़ने में सहायक होगा बल्कि रोजाना कार्यालय आने-जाने वाले हजारों कर्मचारियों, नागरिकों और पर्यटकों को भी आरामदायक यात्रा का विकल्प देगा। विश्लेषकों के अनुसार यह नया कॉरिडोर प्रतिदिन लगभग 60 हजार सरकारी कर्मचारियों और करीब 2 लाख यात्रियों को लाभ पहुंचाएगा। इस मार्ग पर प्रस्तावित स्टेशन आर. के. आश्रम मार्ग (निर्माणाधीन), शिवाजी स्टेडियम, सेंट्रल सेक्रेटेरियट, सीसीएस बिल्डिंग्स, इंडिया गेट, वॉर मेमोरियल-हाईकोर्ट, बड़ौदा हाउस, भारत मंडपम और इंद्रप्रस्थ जैसे प्रमुख और अत्यंत महत्वपूर्ण केंद्रों से होकर गुजरेंगे। यह न केवल यात्रियों की सुविधा बढ़ाएगा बल्कि प्रशासनिक गतिविधियों, राष्ट्रीय आयोजनों और पर्यटन स्थलों तक पहुंच को और अधिक सुगम बनाएगा। इस कॉरिडोर पर कुल 9,570.40 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे, जिसमें से दिल्ली सरकार 2,337.24 करोड़ रुपए का हिस्सा भुगतेगी। फेज-V (ए) परियोजना का दूसरा प्रमुख कॉरिडोर है एयरोसिटी से इंदिरा गांधी एयरपोर्ट टर्मिनल-1 (आईजीडीटी-1) तक प्रस्तावित लाइन। इस कॉरिडोर की कुल लंबाई 2.26 किलोमीटर है और इस पर एक स्टेशन का निर्माण होगा। यह लाइन हवाई यात्रियों के लिए अत्यंत उपयोगी साबित होगी क्योंकि इससे एयरपोर्ट टर्मिनल-1 तक मेट्रो द्वारा सीधी, तेज और निर्बाध पहुंच सुनिश्चित होगी। वर्तमान में यात्री निजी वाहनों और टैक्सियों पर निर्भर हैं, जिससे एयरपोर्ट क्षेत्र में यातायात दबाव बना रहता है। इस नए कॉरिडोर के पूरा होने से ट्रैफिक की भीषण स्थिति में कमी आएगी और यात्रियों को अधिक आरामदायक तथा समय-बचत वाला विकल्प मिलेगा। इस परियोजना की लागत 1,419.64 करोड़ रुपए आंकी गई है, जिसमें से दिल्ली सरकार 351.86 करोड़ रुपए दिया करेगी। तीसरा और अंतिम कॉरिडोर तुगलकाबाद से कालिंदी कुंज तक प्रस्तावित है। इस कॉरिडोर की कुल लंबाई 3.9 किलोमीटर है और इस पर 3 नए स्टेशन बनेंगे। यह मार्ग विशेष रूप से दक्षिण और दक्षिण-पूर्वी दिल्ली के क्षेत्रों को बेहतर मेट्रो कनेक्टिविटी प्रदान करेगा।

रोहित शेट्टी फायरिंग केस में MCOCA एंगल बिश्नोई गैंग कनेक्शन की गहराई से जांच

(जीएनएस)। मुंबई के जुहू इलाके में बॉलीवुड फिल्म निर्माता रोहित शेट्टी के घर के बाहर हुई फायरिंग की घटना ने फिल्म इंडस्ट्री और शहर दोनों में हलचल मचा दी है। अब इस मामले की जांच और भी गंभीर मोड़ पर पहुंच गई है। मुंबई पुलिस ने संकेत दिए हैं कि केस की जांच महाराष्ट्र संगठित अपराध नियंत्रण अधिनियम यानी MCOCA के तहत की जाएगी। पुलिस को आशंका है कि यह घटना केवल स्थानीय बदमाशों की करतूत नहीं, बल्कि किसी संगठित अपराध गिरोह की साजिश भी हो सकती है। यह घटना 31 जनवरी की देर रात और 1 फरवरी की तड़के सामने आई थी, जब अज्ञात हमलावरों ने रोहित शेट्टी के जुहू स्थित आवास के बाहर 4 से 5 राउंड गोलियां चलाईं। हालांकि इस हमले में कोई हताहत नहीं हुआ, लेकिन इलाके में दहशत का माहौल फैल गया। सूचना मिलते ही पुलिस और क्राइम ब्रांच की टीमें मौके पर पहुंचीं और जांच शुरू कर दी गई। शुरुआती जांच के बाद पुलिस ने एक-एक कर पांच आरोपियों को गिरफ्तार किया है, लेकिन मुख्य शूटर अभी भी फरार है। पुलिस ने अब इस केस में MCOCA की धाराएं जोड़ दी हैं, जिससे यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि जांच एजेंसियां इसे एक संगठित अपराध के रूप में देख रही हैं। MCOCA के तहत कार्रवाई करने का मतलब है कि यदि किसी गैंग या आपराधिक सिंडिकेट की संलिप्तता पाई जाती है, तो आरोपियों के खिलाफ सख्त प्रावधानों के तहत कार्रवाई होगी। इस कानून के तहत जमानत पाना कठिन होता है और सजा भी कठोर हो सकती है। जांच के दौरान पुलिस को पता चला कि फायरिंग में इस्तेमाल किया गया हथियार एक गैरेज मैकेनिक द्वारा उपलब्ध कराया गया था। पुलिस ने 42 वर्षीय आसाराम फासले, जो पुणे का निवासी है, को गिरफ्तार किया है। आरोप है कि उसी ने हथियार सप्लाई किया था। पूछताछ में सामने आया कि फासले कुछ समय से लॉरेंस

बिश्नोई गैंग से प्रभावित था और उसका संपर्क शुभम लोनकर से था। शुभम लोनकर को बाबा सिद्दीकी हत्याकांड का मास्टरमाइंड बताया जाता है और वह कथित तौर पर बिश्नोई गैंग का करीबी सदस्य माना जाता है।

पुलिस का कहना है कि हथियार पहले एक अन्य साथी आरोपी को दिया गया और फिर वह हथियार मुख्य शूटर तक पहुंचा, जिसने रोहित शेट्टी के घर के बाहर फायरिंग की। इस पूरी कड़ी को जोड़ने के लिए पुलिस गिरफ्तार आरोपियों से लगातार पूछताछ कर रही है। सभी पांच आरोपियों को मुंबई के एस्प्लेनेड कोर्ट (किला कोर्ट) में पेश किया गया, जहां पुलिस ने आगे की पूछताछ के लिए हिरासत की मांग की है। जांच में डिजिटल सबूत भी अहम भूमिका निभा रहे हैं। पुलिस को जानकारी मिली है कि आरोपियों ने आपस में 'Signal' नामक सुरक्षित मैसेजिंग ऐप के जरिए बातचीत की थी। यह ऐप एंड-टू-एंड एन्क्रिप्शन की सुविधा देता है, जिससे चैट्स को ट्रैक करना मुश्किल होता है। पुलिस अब डिलीट किए गए संदेशों और वॉइस रिकॉर्डिंग को रिकवर करने की कोशिश कर रही है, ताकि पूरी साजिश की परतें खोली जा सकें और यह पता लगाया जा सके कि असली मास्टरमाइंड कौन है।

मुख्य शूटर की गिरफ्तारी अभी तक नहीं हो पाई है। पुलिस ने उसे पकड़ने के लिए 12 विशेष टीमें गठित की हैं, जो अलग-अलग स्थानों पर छापेमारी कर रही हैं। अधिकारियों का कहना है कि शूटर को जल्द गिरफ्तार कर लिया जाएगा और उसके बाद कई और महत्वपूर्ण खुलासे हो सकते हैं। इस बीच सोशल मीडिया पर एक पोस्ट वायरल हुई, जिसमें बिश्नोई गैंग ने इस हमले की जिम्मेदारी लेने जैसा संदेश दिया था। हालांकि पुलिस ने अभी तक इस पोस्ट की आधिकारिक पुष्टि नहीं की है। अधिकारियों का कहना है कि वायरल पोस्ट की सत्यता की जांच की जा रही है और यह देखा जा रहा है कि वह असली है या किसी ने फर्जी तरीके से अपलोड की है। फिलहाल पुलिस ने सीधे तौर पर लॉरेंस बिश्नोई का नाम इस केस में नहीं लिया है, लेकिन जांच की दिशा से यह संकेत मिल रहा है कि गैंग एंगल को गंभीरता से परखा जा रहा है।

कानूनी विशेषज्ञों का मानना है कि यदि MCOCA के तहत आरोप सिद्ध होते हैं और संगठित अपराध की कड़ी साबित हो जाती है, तो यह मामला और अधिक गंभीर हो जाएगा। इससे न केवल आरोपियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई संभव होगी, बल्कि अपराध जगत से जुड़े अन्य नेटवर्क की भी जांच का रास्ता खुलेगा।

मुंबई पुलिस का कहना है कि वे हर पहलू से जांच कर रहे हैं—चाहे वह हथियार की सप्लाई चेन हो, डिजिटल कम्युनिकेशन हो या संभावित गैंग कनेक्शन। फिलहाल प्राथमिकता मुख्य शूटर और साजिश के सूत्रधार को पकड़ना है। पुलिस का दावा है कि जैसे-जैसे जांच आगे बढ़ेगी, इस हाई-प्रोफाइल केस से जुड़े और भी अहम खुलासे सामने आ सकते हैं।

फिल्म इंडस्ट्री में भी इस घटना के बाद सुरक्षा को लेकर चिंता बढ़ गई है। हालांकि रोहित शेट्टी या उनके परिवार को कोई नुकसान नहीं पहुंचा, लेकिन इस तरह की घटना ने यह सवाल जरूर खड़ा कर दिया है कि संगठित अपराध और सोशल मीडिया के जरिए दी जा रही धमकियों को किस स्तर पर गंभीरता से लिया जा रहा है।

जोधपुर अस्पताल कैंटीन में डॉक्टर का हंगामा, वायरल वीडियो से मचा विवाद

(जीएनएस)। राजस्थान के जोधपुर जिले में एक बार फिर चिकित्सा पेशे से जुड़े व्यवहार को लेकर बड़ा विवाद खड़ा हो गया है। एमडीएम अस्पताल परिसर के बाहर स्थित कैंटीन में एक रेजिडेंट डॉक्टर द्वारा कथित रूप से अभद्र भाषा का प्रयोग करने का मामला सामने आया है। इस घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है, जिसके बाद पूरे जिले में चर्चा और नाराजगी का माहौल बन गया है। बताया जा रहा है कि वीडियो में दिखाई दे रहे डॉक्टर का नाम वैभव सीरवी है, जो केएन चेस्ट अस्पताल में रेजिडेंट डॉक्टर के पद पर कार्यरत हैं। घटना शास्त्रीनगर थाना क्षेत्र की बताई जा रही है। वायरल वीडियो में डॉक्टर को कैंटीन संचालक, वहां मौजूद कुछ अन्य लोगों और यहां तक कि मौके पर पहुंचे पुलिसकर्मियों के साथ भी तीखी बहस करते और कथित तौर पर अपशब्दों का प्रयोग करते देखा जा सकता है। सूत्रों के अनुसार, किसी बात को लेकर डॉक्टर और कैंटीन संचालक के बीच विवाद शुरू हुआ था। विवाद का सटीक कारण अभी स्पष्ट नहीं हो पाया है, लेकिन कहा जा रहा है कि मामूली कहासुनी ने अचानक गंभीर रूप ले लिया। प्रत्यक्षदर्शियों का दावा है कि बहस के दौरान डॉक्टर ने आपा खो दिया और जोर-जोर से गालियां देने लगे। जब स्थिति बिगड़ती दिखी तो किसी ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस मौके पर पहुंची, लेकिन आरोप है कि डॉक्टर ने पुलिसकर्मियों के साथ भी अभद्र भाषा का प्रयोग किया। घटना के दौरान वहां मौजूद किसी व्यक्ति ने पूरे घटनाक्रम का वीडियो बना लिया, जो अब सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर तेजी से प्रसारित हो रहा है। वीडियो के सामने आने के बाद आमजन में सवाल उठने लगे हैं कि एक जिम्मेदार पद पर कार्यरत डॉक्टर से इस प्रकार के व्यवहार की अपेक्षा कैसे की जा सकती है।

संपादकीय

हितधारक संस्थाओं की जवाबदेही तय हो

देश में तेजी से बढ़ रहे साइबर ठगी के मामलों पर शीर्ष अदालत का सख्त रुख वक्त की जरूरत है। कोर्ट ने तल्ख टिप्पणी करते हुए कहा कि देश में 54 हजार करोड़ रुपये का डिजिटल फ्रॉड सीधे-सीधे डकैती है। साइबर ठगी खासकर डिजिटल अरेस्ट के जरिये उपभोक्ताओं का करोड़ों रुपये हड़पने के मामले में सुनवाई करते हुए अदालत ने जवाबदेह हितधारकों की भूमिका पर सवाल उठाए हैं। अदालत ने सीबीआई, बैंकों, आरबीआई की कोताही पर प्रश्न खड़े किए। कोर्ट ने नाराजगी जताते हुए कहा कि इन संस्थाओं ने लोगों के खून-पसीने की कमाई को बचाने के लिये समय रहते जरूरी कदम नहीं उठाये हैं। कोर्ट ने डिजिटल अरेस्ट मामलों में कतिपय बैंक अधिकारियों की भूमिका पर भी सवाल खड़े किए हैं। कोर्ट का कहना था कि यह कैसे संभव है कि बैंक अधिकारियों की नाक के नीचे साइबर ठग खाताधारकों का करोड़ों रुपया ठिकाने लगाने में कामयाब हो जाते हैं। कोर्ट ने आशंका जतायी कि इन साइबर ठगी में बैंक अधिकारियों की लापरवाही या मिलीभगत हो सकती है। साइबर ठगी को सीधी डकैती की संज्ञा देते हुए अदालत ने कहा कि इस ठगी पर रोक के लिये केंद्र सरकार स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसिजर यानी एसओपी तैयार करे। इतना ही नहीं कोर्ट ने गृह मंत्रालय को निर्देश दिया कि आरबीआई, दूरसंचार विभाग और अन्य हितधारकों के लिये चार सप्ताह में एसओपी का ड्राफ्ट तैयार किया जाए। बैंकों की कारगुजारी पर नाराजगी जताते हुए कोर्ट ने कहा कि बैंकों को अहसास होना चाहिए कि वे जनता के पैसों के ट्रस्टी हैं। उन्हें जनता के भरोसे को नहीं तोड़ना चाहिए। कोर्ट ने गंभीर चिंता जताई कि आखिर कैसे साइबर ठगी के लाखों केस सामने आ रहे हैं। अकसर सवाल उठाये जाते रहे हैं कि डिजिटल अरेस्ट व अन्य धोखाधड़ी के मामलों में करोड़ों रुपये साइबर अपराधी दूसरे खातों में डाल रहे होते हैं तो बैंक समय पर कार्रवाई क्यों नहीं करते? जबकि बैंकों के पास डेबिट कार्ड को अस्थायी रूप से होल्ड करने का भी अधिकार है।

इसमें दो राय नहीं कि बैंकों के पास ऐसा सिस्टम होना जरूरी है, जिसके जरिये निगरानी हो सके कि कैसे किसी के खाते से निकाली गई बड़ी धनराशि जल्दी-जल्दी दूसरे खातों में हस्तांतरित हो रही है। निश्चित तौर पर बैंकों के सुरक्षा सिस्टम को तत्काल ऐसे मामलों में संज्ञान लेना चाहिए। यही वजह है कि सुप्रीम कोर्ट को रिजर्व बैंक के बाबत टिप्पणी करनी पड़ी कि साइबर ठगी के जरिये जिन खातों से पैसा ठिकाने लगाया जाता है, उस पर संबंधित बैंकों की जवाबदेही सुनिश्चित की जाए। यह सवाल तार्किक है कि अब तक संबंधित बैंक हाथ पर हाथ धरे क्यों बैठे रहे हैं? इसमें दो राय नहीं कि यदि बैंक,पुलिस और अन्य एजेंसियां समय रहते तत्काल कार्रवाई करें तो लोगों के खातों में डकैती से हुए नुकसान को कम किया जा सकता है। वैसे एक साल में बाइस लाख साइबर ठगी की शिकायतें सामने आने के बाद कहना कठिन है कि सीबीआई और अन्य एजेंसियां साइबर ठगी के मामलों में तत्काल अंकुश लगा पाएंगी। वक्त की जरूरत है पुलिस व अन्य एजेंसियों को प्रशिक्षित करके इतना सक्षम बनाया जाए कि वे इन अपराधों की संख्या पर रोक लगा सकें। यह तभी संभव है जब देश का गृह मंत्रालय, केंद्रीय बैंक और टेलीकॉम अथॉरिटी मिलकर इस दिशा में तुरत-फुरत काम करें। इसके लिये जरूरी है कि पूरे देश में यथाशीघ्र एसओपी लागू किया जाए। जिसके लिये शीर्ष अदालत ने केंद्र सरकार को चार सप्ताह के भीतर ड्राफ्ट तैयार करने को कहा है। निश्चित ही यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि एक छोटे राज्य के सालाना बजट से अधिक करीब 54 हजार करोड़ रुपये की धनराशि साइबर डकैती से लूट ली गई है। जिसमें राष्ट्रीय ही नहीं, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय साइबर ठगों की भूमिका बनी हुई है। आज देश के बुजुर्गों, सेवानिवृत्त कर्मचारियों व भोले-भाले लोगों को जिस तरह साइबर ठगी का शिकार बनाया जा रहा है, उसके खिलाफ केंद्र सरकार को राज्य सरकार व अन्य एजेंसियों के साथ तालमेल बनाकर युद्ध स्तर पर काम करने की जरूरत है।

किशोरों की यौन स्वायत्तता से जुड़े यक्ष प्रश्न

> किशोरावस्था में शरीर में प्राकृतिक रूप से हार्मोनल परिवर्तन होते हैं। इस उम्र में आकर्षण, अनुराग और प्रेम जैसे कोमल भाव तथा विपरीत लिंग की यौनता को जानने की तीव्र इच्छा किशोरों के सामान्य लक्षण हैं। उचित मार्गदर्शन व जानकारी के अभाव में प्रायः किशोर भटकते हैं।

किशोर यौन शोषण संरक्षण अधिनियम, 2012 (पोक्सो एक्ट) के दुरुपयोग को लेकर चिन्ता व्यक्त करते हुए, सर्वोच्च न्यायालय ने केन्द्र सरकार से यह विचार करने को कहा है कि क्यों न 'रोमियो-जूलियट' उपबन्ध जोड़कर किशोरों के बीच पारस्परिक सहमति से बने यौन व्यवहार को अपराध के दायरे से बाहर कर दिया जाए। इस परामर्श का उद्देश्य किशोरों को अपराधीकरण से बचाने के साथ उनकी यौन स्वायत्तता को व्यावहारिकता के नजरिए से देखना भी है।

राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) के प्रकाशन 'क्राइम इन इण्डिया-2023' के अनुसार पूरे देश में 'पोक्सो एक्ट' के अन्तर्गत कुल 7,305 मामले दर्ज हुए थे, इनमें से 4,321 मामले बलात्कार, 2,619 गलत यौन-स्पर्श और 264 मामले अन्य प्रकार के यौन-उत्पीड़न से सम्बन्धित थे। इन मामलों में 18 वर्ष से कम आयु के 2,478 नाबालिगों की संलिप्तता भी पाई गई थी जिन्हें हिरासत में लिया गया था।

18 वर्ष से कम उम्र के व्यक्तियों के बीच शारीरिक सम्बन्ध 'पोक्सो एक्ट' के प्रावधानों के अनुसार पूर्णतया प्रतिबन्धित है और घोषित संगीन अपराध है। अतः नाबालिगों के बीच सहमति से बने शारीरिक सम्बन्धों के मामलों में कानून लागू करने वाली एजेंसियां अक्सर इस दुविधा में पड़ जाती है कि कानून को 'जैसा है वैसा ही' लागू किया जाए या 'जैसा होना चाहिए' वैसा लागू किया जाए। विदित हो कि कानून की व्याख्या करने और उसे 'जैसा होना चाहिए' वैसा लागू करने के आदेश देना केवल संवैधानिक न्यायालयों का अधिकार क्षेत्र है। पुलिस और निचली अदालतें कानून को जस का तस लागू करने के लिए ही अधिकृत हैं, इसलिए सर्वोच्च न्यायालय ने केन्द्र सरकार को इस विषय पर ऐसा उपाय करने का सुझाव दिया है, जिससे सहमति से यौन सम्बन्ध बनाने वाले अवयस्कों को कानून का संरक्षण प्राप्त करने के लिए बार-बार उच्च न्यायालयों और सर्वोच्च न्यायालय की शरण में न आना-जाना पड़े। इस उपाय को सर्वोच्च न्यायालय ने 'रोमियो-जूलियट' उपबन्ध की संज्ञा दी है।

'रोमियो-जूलियट' उपबन्ध अंतर्राष्ट्रीय कानूनी प्रथाओं में पहले से ही मौजूद है, जहां अवयस्कों के बीच बने सम्बन्धों और निकटता की बारीकियों को मानव विकास प्रक्रिया का एक आवश्यक हिस्सा माना जाता है। इन कानूनों को इस प्रकार बनाया गया है कि आपराधिक यौन-विचलन और सहमति पर आधारित गैर-शोषणकारी किशोर शारीरिक सम्बन्धों के बीच कानून लागू करने वाली संस्थाएं अपने स्तर पर ही विभेद कर सके ताकि किशारों के अनावश्यक अपराधीकरण को रोका जा सके। संयुक्त राज्य अमेरिका के कम से कम 43 राज्यों ने यौन गतिविधियों में संलिप्त किशोरों को अपराधी बनाए जाने से बचाने के लिए 'क्लोज-इन-एज' छूट (आयु-समीपता अपवाद) सिद्धांत को अपनाया है। इस अपवाद में एक आयु वर्ग के किशारों को अपने से नजदीक के आयु वाले अवयस्क के साथ सहमति से किया गया यौन व्यवहार को अपराध नहीं माना जाता है। कनाडा में 14 और 15 वर्ष के अवयस्क अपने से पांच वर्ष के आयु-अन्तर वाले साथी के साथ सहमति से सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं। फिलीपींस के कानून में 16 वर्ष की आयु वाले किशोरों को तीन वर्ष के आयु-अन्तर वाले साथी के साथ शारीरिक निकटता की अनुमति है। जॉर्जिया में नाबालिगों द्वारा परस्पर सहमति से तीन वर्ष तक के आयु-अन्तर वाले साथी के साथ यौन व्यवहार को बलात्कार नहीं दुर्व्यवहार माना जाता है। भारत में यौन सहमति की आयु 18 वर्ष है, यहां तक कि असहमति से बनाए गए सम्बन्ध को लेकर नाबालिग पत्नी अपने पति पर भी दुराचार का मुकदमा दायर कर सकती है। 'पोक्सो एक्ट' एक लिंग-निरपेक्ष कानून है और इस कानून में अवयस्कों द्वारा यौन व्यवहार के लिए दी गई पारस्परिक तथ्यात्मक सहमति की मान्यता नहीं है। तदानुसार, नाबालिगों द्वारा यौन गतिविधियों में संलिप्तता स्वतः ही अपराध बन जाती है।

सहमति से सम्बन्ध स्थापित करने वाले किशोरों की सूचना पुलिस तक पहुंचाने में 'पोक्सो एक्ट' की धारा 19(1) का प्रमुख योगदान है, जिसके अन्तर्गत कोई भी व्यक्ति, जिनमें चिकित्सा पेशेवर भी शामिल हैं, यदि किसी नाबालिग के यौन गतिविधि में शामिल होने की जानकारी प्राप्त कर लेता है, तो उसे इसकी सूचना पुलिस को देना कानूनी रूप से अनिवार्य हो जाती है। ऐसी रिपोर्ट न करने वालों को 6 माह तक के कारावास का दण्ड दिया जा सकता है। परिणामस्वरूप, नाबालिग विवाहित गर्भवती महिलाएं और यौन गतिविधियों में शामिल अविवाहित किशोर अपनी चिकित्सीय समस्याओं के निदान के लिए योग्य डाक्टरों के पास जाने से कतराते हैं। झोलाछाप डाक्टरों की शरण में जाने को मजबूर होते हैं। कभी-कभी अति चिन्ताग्रस्त माता-पिता, सामाजिक दबाव के चलते अथवा व्यक्तिगत प्रतिशोध के वशीभूत, अपने बच्चों के सहमति-आधारित सम्बन्धों को बलात्कार या छेड़छाड़ के रूप दिखा पुलिस को सूचना दे देते हैं, ताकि पोक्सो अधिनियम के अन्तर्गत उनके अवयस्क यौन साथी को दण्डित कराया जा सके। वर्ष 2023 में 'पोक्सो एक्ट' के अन्तर्गत 2,478 मामले नाबालिगों के विरुद्ध दर्ज हुए थे। इनमें से कुछ परस्पर सहमति से जिज्ञासावश बनाए गए सम्बन्ध भी शामिल हैं।

किशोरावस्था जीवन के विकास में एक महत्वपूर्ण पड़ाव है, जिसमें किशोरों के शरीर में प्राकृतिक, रचनात्मक और हार्मोनल परिवर्तन होते हैं, जो कालान्तर में मनुष्योचित भावनाओं के प्रारम्भ और परिपक्वता का कारण बनते हैं। इस उम्र में परस्पर आकर्षण, अनुराग और प्रेम जैसे कोमल भाव तथा अपने विपरीत लिंग की यौनता एवं शारीरिकता को जानने की तीव्र इच्छा किशोरों के व्यवहार में दृष्टिगोचर होना एक सामान्य लक्षण है। उचित मार्गदर्शन और जानकारी के अभाव में प्रायः किशोर भटक जाते हैं। आयु-सम्बन्धी शारीरिक, जैविक और भावनात्मक असंतुलन उन्हें यौन-विचलन की दलदल में धकेल देता है, क्योंकि नाबालिग प्राकृतिक परिवर्तनों और यौन व्यवहार के परिणामों को समझने के लिए पूर्णतया सक्षम नहीं होते हैं।

'पोक्सो एक्ट' का मूल उद्देश्य वयस्कों द्वारा बच्चों के यौन शोषण को रोकना और उनकी रक्षा करना है। यह उचित प्रतीत नहीं होता कि किशोरों के बीच कौतूहलवश तथा सहमति से बने यौन सम्पर्क को भी इस अधिनियम के अन्तर्गत अपराध की श्रेणी में रखा जाए। दूसरी ओर, वर्तमान सामाजिक परिस्थितियों के दृष्टिगत किशोरों के सभी सहमति-आधारित सम्बन्धों को पूरी तरह अपराधमुक्त करना भी कठिन प्रतीत होता है, क्योंकि भारतीय समाज इसके लिए तैयार दिखाई नहीं देता है। इसीलिए, मौजूदा कानूनों में ही कुछ संशोधन करके उचित रास्ता निकालने की जरूरत है।

'एक्स' बनाम प्रधान सचिव, स्वास्थ्य एवं अन्य, प्रकरण में 29 सितम्बर, 2022 को सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट किया था कि पोक्सो अधिनियम की धारा 19(1) के अन्तर्गत पुलिस को दी जाने वाली सूचना में चिकित्सा पेशेवरों को नाबालिग की पहचान और अन्य व्यक्तिगत विवरण प्रकट करने की आवश्यकता नहीं है। यह व्याख्या पंजीकृत चिकित्सा पेशेवरों के एतद्-सम्बन्धी वैधानिक दायित्व और संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत नाबालिगों के निजता के अधिकारों के बीच टकराव को रोकती है। इस फैसले को नज़ीर मानकर अवयस्कों द्वारा सहमति से बनाए गए यौन-सम्बन्धों को अपराध नहीं दुर्व्यवहार की श्रेणी में रखा जा सकता है। उन्हें उचित मार्गदर्शन देने की व्यवस्था की जा सकती है।

इसके अतिरिक्त, 16 से 18 वर्ष आयु-समूह के वे किशोर, जो सहमति से यौनाचार के मामलों में संलिप्त हो जाते हैं, को किशोर न्याय अधिनियम, 2015 की मौजूदा व्यवस्था के अनुसार वयस्कों की तरह मुकदमा चलाकर दण्डित करने के प्रावधानों की भी समीक्षा करने की जरूरत है। इसके बजाय, ऐसे किशोरों को सामुदायिक सेवा और निगरानी में सदाचार की परिवीक्षा (प्रोबेशन) जैसे गैर-हिरासती सुधारात्मक उपायों के दायरे में लेकर उन्हें मार्गदर्शन देने के प्रयास होने चाहिए।

प्रेरणा

आत्मविकास से निर्मित होता है स्थायी सम्मान

प्राचीन चीन में कन्फ्यूशियस को केवल एक शिक्षक नहीं, बल्कि जीवन-दृष्टा माना जाता था। वे मनुष्य के बाहरी संघर्षों के पीछे छिपी आंतरिक उलझनों को समझने की क्षमता रखते थे। उनका विश्वास था कि समाज में सम्मान और प्रतिष्ठा किसी पद, धन या प्रभाव से स्थायी नहीं बनती, बल्कि वह व्यक्ति के ज्ञान, संयम और निरंतर कर्म से जन्म लेती है। एक दिन वे अपने शिष्यों के साथ नगर भ्रमण पर निकले। मार्ग में एक शांत झील के किनारे उन्होंने एक युवक को अकेले बैठे देखा। उसका चेहरा चिंता से भरा था और आंखों में निराशा की नमी थी।

कन्फ्यूशियस उसके समीप गए और सहज स्वर में पूछा, "तुम्हारा मन इतना व्यथित क्यों है?" युवक ने सिर झुकाकर उत्तर दिया, "मैं एक छोटे पद पर कार्य करता हूं। मैं पूरी निष्ठा से अपना काम करता हूं, परंतु कोई मेरी बात को महत्व नहीं देता। मेरे सुझावों को अनदेखा किया जाता है और कई बार उनका मजाक भी उड़ाया जाता है। मैं चाहता हूं कि लोग मुझे सम्मान दें, पर मुझे समझ नहीं आता कि उसे कैसे प्राप्त करूं।" उसके शब्दों में पीड़ा थी, जैसे वह स्वयं को समाज के विशाल ढांचे में नगण्य मान बैठा हो।

कन्फ्यूशियस ने कुछ क्षण विचार किया, फिर भूमि पर बैठकर एक लकड़ी से मिट्टी में एक बड़ा वृत्त बनाया। उन्होंने युवक से कहा, "इसे देखो। यह समाज है—विस्तृत, विविध और अनेक विचारों से भरा हुआ।" फिर उन्होंने उस वृत्त के मध्य एक छोटा-सा बिंदु बनाया और बोले, "यह तुम हो। तुम्हें लगता है कि तुम छोटे हो, इसलिए महत्वहीन हो। परंतु छोटा होना असमर्थ होना नहीं है।"

युवक ध्यानपूर्वक उनकी ओर देखने लगा। कन्फ्यूशियस ने उस बिंदु से बाहर की ओर कई रेखाएं खींचीं, जो वृत्त की सीमा तक पहुंच रही थीं। वे बोले, "जब यह बिंदु केवल बिंदु रहता है, तब इसकी पहचान सीमित रहती है। पर जब इससे रेखाएं बाहर की ओर फैलती हैं, तब यह पूरे वृत्त को छू लेता है। इसी प्रकार जब तुम्हारा ज्ञान, धैर्य और कर्म विस्तार पाते हैं, तब समाज स्वयं तुम्हें पहचानता है।"

युवक ने कहा, "पर मैं तो पहले से ही मेहनत करता हूं। फिर भी लोग मुझे गंभीरता से नहीं लेते।" कन्फ्यूशियस मुस्कुराए और बोले, "मेहनत आवश्यक है, पर पर्याप्त नहीं। तुम्हारी मेहनत के साथ तुम्हारा दृष्टिकोण, व्यवहार और निरंतरता भी महत्वपूर्ण है। यदि तुम्हारे विचार स्पष्ट हैं, तुम्हारा आचरण संतुलित है और तुम्हारा व्यवहार विनम्र है, तो धीरे-धीरे लोग तुम्हारी उपस्थिति को स्वीकार करेंगे।"

उन्होंने आगे कहा, "सम्मान कभी मांगने से नहीं मिलता। जो सम्मान मांगकर प्राप्त होता है, वह अस्थायी होता है। सच्चा सम्मान तब जन्म लेता है जब व्यक्ति अपने गुणों से दूसरों के मन में स्थान बना लेता है। यदि तुम स्वयं को इतना विकसित कर लो कि तुम्हारी उपेक्षा करना कठिन हो जाए, तो सम्मान तुम्हारे पास स्वयं आएगा।"

कन्फ्यूशियस ने जल का उदाहरण देते हुए समझाया, "देखो, पानी को कोई नहीं रोक सकता। वह धीरे-धीरे, निरंतर बहता रहता है। उसकी यही निरंतरता चट्टानों को भी काट देती है। यदि तुम भी अपने ज्ञान और कर्म में निरंतर रहोगे, तो तुम्हारे प्रयास व्यर्थ नहीं जाएंगे।" उन्होंने यह भी जोड़ा कि अक्सर व्यक्ति तत्काल परिणाम चाहता है। वह चाहता है कि उसकी योग्यता का तुरंत स्वीकार हो जाए। पर समाज समय लेकर मूल्यांकन करता है। इसलिए धैर्य आवश्यक है।

युवक ने स्वीकार किया कि वह कई बार आलोचना से आहत हो जाता है और भीतर ही भीतर क्रोधित हो उठता है। कन्फ्यूशियस ने उसे समझाया, "क्रोध तुम्हारे भीतर की शक्ति को क्षीण कर देता है। यदि तुम दूसरों की हंसी से विचलित हो जाओगे, तो तुम्हारा आत्मविश्वास कम हो जाएगा। आत्मसम्मान का आधार बाहरी प्रशंसा नहीं, बल्कि आंतरिक संतुलन होता है। जब तुम भीतर से मजबूत हो जाओगे, तो बाहरी उपेक्षा तुम्हें नहीं डिगा पाएगी।"

उन्होंने युवक से पूछा, "क्या तुम अपने साथियों की सहायता करते हो?" युवक ने संकोच से कहा कि वह केवल अपने कार्य तक सीमित रहता है। कन्फ्यूशियस ने कहा, "जब तुम दूसरों की कठिनाइयों को समझोगे और उनकी सहायता करोगे, तब वे तुम्हें केवल एक कर्मचारी नहीं, बल्कि एक सहायक और मार्गदर्शक के रूप में देखने लगेंगे। सम्मान केवल दक्षता से नहीं, बल्कि सहयोग और संवेदनशीलता से भी अर्जित होता है।"

धीरे-धीरे युवक के मन का बोझ हल्का होने लगा। उसे समझ में आया कि वह अब तक सम्मान को एक बाहरी पुरस्कार समझ रहा था, जबकि वह वास्तव में आत्मविकास का परिणाम है। उसने कहा, "गुरुदेव, क्या यह मार्ग लंबा नहीं होगा?" कन्फ्यूशियस ने उत्तर दिया, "हर बीज को वृक्ष बनने में समय लगता है। यदि बीज अधीर होकर मिट्टी को दोष दे, तो वह कभी अंकुरित नहीं होगा। तुम्हें अपनी जड़ों को मजबूत करना है। जब जड़ें गहरी होंगी, तब शाखाएं स्वयं फैलेंगी।"

उन्होंने अंत में कहा, "पहले अपने भीतर आकार लो, फिर संसार तुम्हें स्थान देगा। यदि तुम्हारे भीतर ज्ञान का प्रकाश होगा, तो वही प्रकाश तुम्हें समाज में प्रतिष्ठा दिलाएगा।" युवक के चेहरे पर अब आशा की झलक थी। उसने प्रणाम किया और संकल्प लिया कि वह अब सम्मान की मांग नहीं करेगा, बल्कि स्वयं को इतना योग्य बनाएगा कि लोग उसे स्वाभाविक रूप से सम्मान दें।

झील के किनारे हुई यह साधारण-सी घटना एक गहरी सीख बन गई। यह स्पष्ट हुआ कि समाज में स्थायी प्रतिष्ठा पाने का मार्ग भीतर से बाहर की ओर जाता है। जब व्यक्ति अपने ज्ञान को समृद्ध करता है, अपने कर्म को निरंतर और ईमानदार बनाता है तथा अपने व्यवहार को विनम्र और संतुलित रखता है, तब समाज उसे अनदेखा नहीं कर सकता। सम्मान कोई उपहार नहीं, बल्कि सतत आत्मविकास का फल है। जो व्यक्ति अपने बिंदु से बाहर निकलकर समाज के वृत्त को स्पर्श करता है, वही सच्ची प्रतिष्ठा का अधिकारी बनता है।

रियल मनी गेम्स पर प्रतिबंध से सरकार और स्टेकहोल्डर्स दोनों को हुआ भारी नुकसान!

ऑनलाइन गेमिंग (प्रमोशन एंड रेगुलेशन) अधिनियम, 2025 में रियल मनी गेम्स पर प्रतिबंध लगाने से सरकार और स्टेकहोल्डर्स दोनों को अल्पकालिक व दीर्घकालिक नुकसान हुआ है। हालांकि, सरकार इसे सामाजिक सुरक्षा के लिए आवश्यक कदम मानती है, जबकि उद्योग जगत दीर्घकालिक हानि का दावा करता है। आंकड़े बताते हैं कि आम बजट 2026 और उससे ठीक पहले आए आर्थिक सर्वे भी केंद्र सरकार के बढ़ते वित्तीय घाटे की ओर इशारा कर चुके हैं, इसलिए बेहतर तो यह होता कि मोदी सरकार ऐसे द्विपक्षीय हानिप्रद फैसले लेने से पहले इससे जुड़े उद्योग जगत व अन्य स्टेक होल्डर्स से उन्मुक्त हृदय से बातचीत के बाद ही किसी अंतिम नतीजे पर पहुंचती। जहां तक सरकार को नुकसान की बात है तो सरकार को सालाना 15,000-20,000 करोड़ जीएसटी (GST) राजस्व का सीधा नुकसान हुआ, क्योंकि रियल मनी सेक्टर 86% राजस्व का स्रोत था। वहीं, इस क्षेत्र में सक्रिय 400+ कंपनियों के बंद होने से कॉर्पोरेट टैक्स और FDI (25,000 करोड़) प्रभावित हुए। वहीं, जहां तक स्टेकहोल्डर्स को हानि की बात है तो रियल मनी गेम्स सेक्टर में 2 लाख नौकरियां (प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से) खतरे में हैं, जिसमें डेवलपर्स, मार्केटर्स और फिनटेक शामिल हैं। जिससे 50 करोड़ गेमर्स अवैध ऑफशोर प्लेटफॉर्म्स की ओर मुड़ सकते हैं, जिससे धोखाधड़ी और मनी लॉन्ड्रिंग बढ़ने के आसार प्रबल हैं।

हालांकि, सरकार ने अपने निर्णय के बचाव में तर्क दिया है कि 45 करोड़ लोगों को 20,000 करोड़ का नुकसान हुआ था, जबकि नए प्रतिबंध से ई-स्पोर्ट्स ($1-2 बिलियन) मजबूत होगा। इस प्रकार लंबे समय में नया राजस्व (टूर्नामेंट्स, स्पॉन्सरशिप) नुकसान की भरपाई करेगा।

बताया जाता है कि जिस तरह से ऑनलाइन गेमिंग (प्रमोशन एंड रेगुलेशन) अधिनियम, 2025 को अगस्त 2025 में संसद के दोनों सदनों से मात्र दो दिनों में पारित किया गया, वह त्वरित निर्णय है, जिसने 'रियल मनी गेम्स' पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया, जो अर्थव्यवस्था पर कई दुष्प्रभाव डाल चुका है और आगे भी पड़ेगा।

जहां तक नौकरियों पर प्रभाव की बात है तो इससे लगभग 2 लाख प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष नौकरियां खतरे में पड़ गई हैं, क्योंकि 400 से अधिक कंपनियां बंद होने की कगार पर हैं। इंडस्ट्री बॉडीज के अनुसार, $25 अरब डॉलर के सेक्टर का बड़ा हिस्सा रियल मनी गेमिंग था, जिसका अचानक अंत होने से मानव संसाधन संकट पैदा हो गया। वहीं, जहां तक सरकारी राजस्व हानि की बात है तो सरकार को सालाना 20,000-25,000 करोड़ रुपये के टैक्स रेवेन्यू का नुकसान हो सकता है, जिसमें जीएसटी (GST) प्रमुख है। इससे डिजिटल इकोसिस्टम जैसे फिनटेक, विज्ञापन और कंटेंट क्रिएशन प्रभावित हुए हैं।

दिलचस्प तो यह कि सरकार के तुगलकी फैसलों का असर भारत में होने वाले विदेशी निवेश पर भी पड़ेगा। इसलिए जहां तक निवेश प्रभाव की बात है तो देश में होने वाले 25,000 करोड़ के विदेशी निवेश (FDI) पर असर पड़ा है, क्योंकि नीतिगत अनिश्चितता से निवेशक पीछे हट रहे हैं। आखिर इसके त्वरित पारित होने से परामर्श की कमी ने डिजिटल अर्थव्यवस्था में विश्वास कमजोर किया। वहीं, जहां तक अन्य जोखिम की बात है तो उपभोक्ता अवैध ऑफशोर प्लेटफॉर्म्स या ग्रे मार्केट की ओर मुड़ सकते हैं, जिससे धोखाधड़ी और मनी लॉन्ड्रिंग बढ़ सकता है। हालांकि ई-स्पोर्ट्स को बढ़ावा मिलेगा, लेकिन समग्र आर्थिक नुकसान प्रमुख चिंता है।

यही वजह है कि ऑनलाइन गेमिंग (प्रमोशन एंड रेगुलेशन) अधिनियम, 2025 पर सरकार ने उद्योग संगठनों को स्टेकहोल्डर मीटिंग्स, संसदीय बहस और आधिकारिक बयानों के माध्यम से आश्वासन दिए। जिसमें मुख्य फोकस रियल मनी गेमिंग प्रतिबंध के बावजूद स्किल-बेस्ड सेक्टर की सुरक्षा और विकास पर था। इसलिए संक्रमणकालीन समर्थन देते हुए सरकार ने 6-12 महीने का ट्रांजिशन पीरियड घोषित किया, जिसमें प्रभावित कंपनियों को लाइसेंस कन्वर्जन और रिस्किलिंग फंड की सुविधा दी गई। साथ ही FIFA और अन्य बॉडीज को आश्वस्त किया कि ई-स्पोर्ट्स को पूर्ण संरक्षण मिलेगा।

जहां तक निवेश व नीतिगत सुरक्षा की बात है तो केंद्रीय बोर्ड की स्थापना से नियामक स्पष्टता का वादा किया गया, FDI को प्रोत्साहन के लिए टैक्स इंसेंटिव्स बढ़ाए। वहीं खेल मंत्रालय ने स्टार्टअप्स के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर ग्रांट्स का ऐलान किया, जो 500 करोड़ का है। जहां तक कानूनी निपटारा की बात है तो सुप्रीम कोर्ट में लंबित याचिकाओं पर सरकार ने हलफनामा दाखिल कर कहा कि अधिनियम व्यवसाय स्वतंत्रता का उल्लंघन नहीं करता, बल्कि जुआ रोककर स्वस्थ इकोसिस्टम बनाता है। इससे उद्योग का अधिकांश विरोध शांत हुआ।

यही वजह है कि ई-स्पोर्ट्स उद्योग ने ऑनलाइन गेमिंग (प्रमोशन एंड रेगुलेशन) अधिनियम, 2025 पर मुख्य रूप से चिंता जताई, लेकिन पूर्ण विरोध कम था। दरअसल ई-स्पोर्ट्स प्लेयर्स वेलफेयर एसोसिएशन (EPWA) ने बिल पारित होने से ठीक पहले पीएम मोदी को पत्र लिखकर स्किल-बेस्ड गेम्स और चांस-बेस्ड गेम्स के बीच अंतर न करने पर आपत्ति दर्ज की। क्योंकि इनकी प्रमुख चिंताएं निम्नलिखित हैं- पहला, एसोसिएशन ने कहा कि पूर्ण प्रतिबंध से खिलाड़ियों की आजीविका (कोचिंग, स्ट्रीमिंग, टूर्नामेंट आयोजन, कंटेंट क्रिएशन) खतरे में पड़ जाएगी। दूसरा, आर्थिक रूप से कमजोर गेमर्स के अवैध प्लेटफॉर्म्स की ओर मुड़ने और भारत की वैश्विक ई-स्पोर्ट्स प्रतिष्ठा को नुकसान का डर जताया।

अभियान

घर बैठे बाबा कालभैरव की कृपा, डिजिटल दरबार में दिव्य अनुभूति

सनातन परंपरा में बाबा कालभैरव को केवल एक देवता नहीं, बल्कि धर्म और न्याय के रक्षक के रूप में पूजनीय माना गया है। वे भगवान शिव के रौद्र स्वरूप हैं, काशी के कोतवाल हैं और भक्तों के भय, संकट तथा ग्रहदोषों का नाश करने वाले देव हैं। उनकी आराधना से साहस, संरक्षण और आध्यात्मिक शक्ति की प्राप्ति होती है। आज के इस बदलते युग में जब जीवन की गति अत्यंत तेज हो गई है, तब भी आस्था की ज्योति उतनी ही प्रखर है। अंतर केवल इतना आया है कि अब बाबा कालभैरव का दरबार डिजिटल माध्यम से भी भक्तों के लिए खुल गया है। जो भक्त किसी कारणवश मंदिर तक नहीं पहुंच पाते, वे अब घर बैठे ही विशेष पूजा करवा सकते हैं और लाइव दिव्य आरती का दर्शन कर सकते हैं।

कालभैरव की महिमा अनंत है। मान्यता है कि जो भक्त सच्चे मन से उनका स्मरण करता है, उसके जीवन से भय दूर हो जाता है। शनि, राहु और केतु जैसे ग्रहों के अशुभ प्रभावों को शांत करने में भी उनकी आराधना अत्यंत फलदायी मानी जाती है। कालाष्टमी, भैरव अष्टमी और शनिवार के दिन विशेष रूप से उनकी पूजा का महत्व बताया गया है। भक्त दूर-दूर से उनके मंदिर में दर्शन करने आते हैं, क्योंकि ऐसा विश्वास है कि बाबा के दरबार में सच्चे मन से की गई प्रार्थना कभी व्यर्थ नहीं जाती। किंतु हर व्यक्ति के लिए यात्रा करना संभव नहीं होता। वृद्धावस्था, स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं, दूरी, समय की कमी या अन्य पारिवारिक कारणों से अनेक श्रद्धालु मंदिर तक नहीं पहुंच पाते। ऐसे भक्तों की भावना को समझते हुए अब ऑनलाइन पूजा की सुविधा प्रारंभ की गई है।

यह सुविधा केवल तकनीकी व्यवस्था नहीं, बल्कि भक्त और भगवान के बीच एक नया सेतु है। अब श्रद्धालु कालभैरव मंदिर की आधिकारिक वेबसाइट या मान्यता प्राप्त डिजिटल माध्यम से अपने नाम से विशेष पूजा बुक कर सकते हैं। सबसे पहले भक्त को वेबसाइट पर जाकर अपना पंजीकरण करना होता है। मोबाइल नंबर या ईमेल के माध्यम से अकाउंट बनाया जाता है, जिससे बुकिंग की जानकारी सुरक्षित रहती है। यह प्रक्रिया सरल और पारदर्शी है, ताकि हर श्रद्धालु बिना किसी भ्रम के पूजा का लाभ ले सके।

लॉग-इन करने के बाद भक्त कालभैरव मंदिर का चयन कर सकते हैं। वहां विभिन्न प्रकार की पूजाओं के विकल्प उपलब्ध होते हैं, जैसे विशेष कालभैरव पूजा, ग्रह शांति अनुष्ठान, संकट निवारण पूजा या किसी शुभ अवसर की पूजा। भक्त अपनी श्रद्धा और आवश्यकता के अनुसार विकल्प चुनते हैं। इसके साथ ही लाइव स्ट्रीम का भी प्रावधान है, जिससे निर्धारित समय पर पूजा और आरती का सीधा प्रसारण देखा जा सकता है। जब स्क्रीन पर मंदिर के गर्भगृह का दृश्य आता है, दीपों की ज्योति जलती है, शंखनाद और घंटियों की ध्वनि गूंजती है, तब घर का वातावरण भी मंदिर जैसा पवित्र हो उठता है।

पूजा बुक करते समय भक्त को अपना नाम, गोत्र और अन्य आवश्यक विवरण भरना होता है। यदि किसी विशेष कामना, समस्या या अवसर के लिए पूजा करवाई जा रही हो, तो उसका उल्लेख भी किया जा सकता है। पंडित जी विधि-विधान से मंत्रोच्चार करते हुए भक्त का नाम और गोत्र उच्चारित करते हैं। यह क्षण भक्त के लिए अत्यंत भावुक और पवित्र होता है, क्योंकि उसे अनुभव होता है कि उसकी प्रार्थना सीधे बाबा के चरणों में अर्पित हो रही है।

भक्त अपनी सुविधानुसार पूजा की तिथि चुन सकते हैं। विशेष पर्वों पर पूजा का महत्व और भी बढ़ जाता है, इसलिए कई श्रद्धालु पहले से बुकिंग कर लेते हैं। पूजा संपन्न होने के बाद मंदिर की ओर से प्रसाद तैयार कर भक्त के दिए गए पते पर भेजा जाता है। जब घर पर बाबा का प्रसाद पहुंचता है, तो वह केवल मिठाई या भोग नहीं होता, बल्कि आशीर्वाद का प्रतीक होता है। परिवार के सदस्य श्रद्धा से उसे ग्रहण करते हैं और अपने जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का अनुभव करते हैं।

ऑनलाइन पूजा के लिए निर्धारित शुल्क पूजा के प्रकार के अनुसार भिन्न होता है। सामान्यतः यह 500 रुपये से लेकर 2,000 रुपये तक हो सकता है। इसमें पूजा सामग्री, पंडित जी की दक्षिणा, लाइव प्रसारण और प्रसाद भेजने की व्यवस्था शामिल होती है। यह पूरी प्रक्रिया पारदर्शी है और भुगतान डिजिटल माध्यम से सुरक्षित तरीके से किया जा सकता है। भुगतान के पश्चात रसीद और बुकिंग आईडी ईमेल या व्हाट्सएप पर प्राप्त हो जाती है, जिससे श्रद्धालु को पूर्ण संतोष और विश्वास बना रहता है।

डिजिटल दरबार का यह स्वरूप यह दर्शाता है कि आस्था समय और स्थान की सीमाओं से परे है। भगवान तक पहुंचने के लिए केवल सच्चे मन की आवश्यकता होती है। यदि भावना निर्मल हो और विश्वास अटूट, तो घर का एक छोटा-सा पूजा कोना भी मंदिर बन सकता है। जब भक्त स्क्रीन पर आरती देखते हुए हाथ जोड़ता है, मंत्रों के साथ "जय कालभैरव" का उच्चारण करता है, तो उसके भीतर वही कंपन और शांति उत्पन्न होती है, जो मंदिर में उपस्थित होकर होती है।

यह भी महत्वपूर्ण है कि भक्त केवल आधिकारिक और विश्वसनीय प्लेटफॉर्म के माध्यम से ही पूजा बुक करें। इससे उनकी श्रद्धा और धन दोनों सुरक्षित रहते हैं। डिजिटल सुविधा का उद्देश्य भक्तों को सुविधा देना है, न कि उन्हें भ्रमित करना। इसलिए सावधानी और सजगता आवश्यक है।

आज जब तकनीक ने संसार को एक छोटे से उपकरण में समेट दिया है, तब बाबा कालभैरव का दरबार भी उसी तकनीक के माध्यम से हर घर तक पहुंच रहा है। यह परिवर्तन परंपरा का विरोध नहीं, बल्कि उसका विस्तार है। जहां पहले केवल मंदिर तक पहुंचने वाले भक्त ही आरती का आनंद ले पाते थे, वहीं अब दूर देशों में बसे श्रद्धालु भी उसी क्षण दिव्य आरती का साक्षात्कार कर सकते हैं।

अंततः यही सत्य है कि पूजा का सार स्थान में नहीं, भावना में है। बाबा कालभैरव अपने भक्तों की सच्ची श्रद्धा को स्वीकार करते हैं, चाहे वह मंदिर के प्रांगण से उठे या घर के एक शांत कोने से। डिजिटल माध्यम केवल एक साधन है, भक्ति का मूल तत्व तो हृदय की पवित्रता और विश्वास की दृढ़ता है। जो भक्त सच्चे मन से उनका स्मरण करता है, उसके जीवन में साहस, सुरक्षा और शांति का प्रकाश अवश्य फैलता है। बाबा कालभैरव का यह डिजिटल दरबार उसी अनंत कृपा का एक आधुनिक स्वरूप है, जो हर युग में अपने भक्तों की रक्षा और मार्गदर्शन करता आया है।

RNI No. GJHIN/25/A2786 Printed, Published & Owned by RAGINI JIGNESHKUMAR VAGHELA and Printed By (1) JIGNESH RASHIKBHAI GAJJAR at Vansh Corporation, A/8, Shayona Golden Estate, Shahibag, Ahmedabad - 380 004 (2) DESAI RAHUL MAHESHBHAI at Bhavani Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002. (3) HADIK MAHESHBHAI DESAI at Bhoomi Offset, "Bhatiya Ni Wadi, Opp Kalupur Railway Station, Kalupur, Ahmedabad-380 002 and Published from B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424. Editor : JIGNESHKUMAR PATHABHAI VAGHELA
Regd.Office : B/13, Sneh Plaza Shopping Center, I.O.C. Road, Chandkheda, Ahmedabad - 382 424 Gujarat,India. Phone : (o) 7698333307 (M) 8485951747,7096333307
Email:navsarjansanskruti2016@gmail.com*navsarjansanskruti2016@yahoo.com*Website : www.navsarjansanskruti.com

अहिंसा की नगरी पालीताना: दुनिया का पहला पूर्ण शाकाहारी शहर बना गुजरात का यह पवित्र तीर्थ

(जीएनएस)। गुजरात के भावनगर ज़िले में स्थित पालीताना ने इतिहास के पन्नों में अपना नाम एक अनोखी पहचान के साथ दर्ज करा लिया है। शत्रुंजय पर्वत की गोद में बसा यह शांत और आध्यात्मिक नगर अब दुनिया का पहला ऐसा शहर बन गया है, जहां मांसाहार की बिक्री और सेवन पर पूरी तरह से प्रतिबंध लागू है। यह निर्णय केवल प्रशासनिक आदेश नहीं, बल्कि सदियों पुरानी आस्था, तप और अहिंसा की परंपरा का विस्तार है, जिसने पालीताना को वैश्विक स्तर पर चर्चा का विषय बना दिया है।

पालीताना को जैन धर्म का एक अत्यंत पवित्र तीर्थ स्थल माना जाता है। यहां स्थित शत्रुंजय पर्वत पर सैकड़ों भव्य जैन मंदिर हैं, जिनमें आदिनाथ भगवान का मंदिर विशेष महत्व रखता है। हर वर्ष लाखों श्रद्धालु देश-विदेश से यहां दर्शन और साधना के लिए पहुंचते हैं। यह नगर केवल मंदिरों का समूह नहीं, बल्कि त्याग, संयम और आत्मशुद्धि की जीवंत प्रयोगशाला है। जैन दर्शन का मूल सिद्धांत 'अहिंसा परमो धर्मः' यहां के जनजीवन में गहराई से रचा-बसा है। इसी भावना को सशक्त रूप देने के लिए शहर में मांस, मछली और अंडे की बिक्री पर पूर्ण प्रतिबंध लागू किया गया है।

इस ऐतिहासिक निर्णय के पीछे जैन साधु-साध्वियों और स्थानीय समुदाय की लंबी पहल रही। वर्षों से यह मांग उठती रही कि तीर्थ क्षेत्र की पवित्रता बनाए रखने के लिए पशु वध और मांस विक्रय जैसी गतिविधियों को समाप्त किया जाए। अंततः प्रशासन ने स्थानीय भावनाओं का सम्मान करते हुए शहर की सीमाओं के भीतर मांसाहारी खाद्य पदार्थों की बिक्री पर रोक लगा दी। मांस की दुकानों को बंद कराया गया और उल्लंघन करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई का प्रावधान किया गया। यह कदम केवल धार्मिक आग्रह का परिणाम नहीं, बल्कि शहर की सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखने की दिशा में उठाया गया निर्णायक कदम माना जा रहा है।

पालीताना का यह रूप आज की बदलती जीवनशैली के बीच एक अलग संदेश देता है। देश के अनेक शहरों में जहां मांसाहार तेजी से लोकप्रिय हो रहा है और सामाजिक आयोजनों में इसकी मांग बढ़ती जा रही है, वहीं पालीताना ने पूरी तरह विपरीत राह चुनी है। यहां का वातावरण सात्विकता और शांति से भरा हुआ है। सुबह-सवेरे मंदिरों की घंटियों की ध्वनि और श्रद्धालुओं की पदयात्रा इस शहर की पहचान हैं। शत्रुंजय पर्वत की सीढ़ियां चढ़ते हुए श्रद्धालु आत्मिक शांति का अनुभव करते हैं, और यही भावना पूरे नगर की जीवनशैली में झलकती है।

इस निर्णय को लेकर विभिन्न प्रतिक्रियाएं भी सामने आईं। कुछ लोगों ने इसे धार्मिक स्वतंत्रता और व्यक्तिगत पसंद के दृष्टिकोण से देखा, तो कुछ ने इसे एक पवित्र तीर्थ की गरिमा बनाए रखने का साहसिक प्रयास बताया। लेकिन पालीताना में यह निर्णय व्यापक सामाजिक सहमति के साथ लागू हुआ। यहां के निवासियों ने इसे अपनी आस्था और परंपरा की रक्षा के रूप में स्वीकार किया। पर्यटकों और आगंतुकों को भी शहर के नियमों का पालन करना अनिवार्य है, जिससे तीर्थ क्षेत्र की पवित्रता अक्षुण्ण बनी रहे।

आज पालीताना केवल एक शहर नहीं, बल्कि एक विचार बन चुका है। यह विचार करुणा, संयम और सह-अस्तित्व का है। जब दुनिया भर में पर्यावरण संरक्षण, पशु अधिकार और नैतिक जीवनशैली पर बहस चल रही है, तब पालीताना का उदाहरण एक अलग दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। यहां का शाकाहार केवल खान-पान की आदत नहीं, बल्कि आध्यात्मिक अनुशासन और सामाजिक संकल्प है।

गुजरात की इस नगरी ने यह दिखा दिया है कि यदि समाज अपनी सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध हो, तो वह वैश्विक स्तर पर भी अपनी विशिष्ट पहचान बना सकता है। पालीताना की पहचान अब केवल जैन तीर्थ के रूप में नहीं, बल्कि अहिंसा की जीवंत नगरी के रूप में स्थापित हो चुकी है, जिसने दुनिया को यह संदेश दिया है कि आध्यात्मिक आस्था और सामाजिक निर्णय मिलकर एक नई दिशा दे सकते हैं।

अहमदाबाद विमान हादसे पर सुप्रीम कोर्ट सख्त, तीन हफ्ते में रिपोर्ट तलब

(जीएनएस)। नई दिल्ली। 12 जून 2025 को हुए अहमदाबाद एयर इंडिया विमान हादसे को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने सख्त रुख अपनाया है। मुख्य न्यायाधीश सूर्य कांत की अध्यक्षता वाली पीठ ने एयरक्राफ्ट एक्सीडेंट इन्वेस्टिगेशन ब्यूरो (AAIB) को निर्देश दिया है कि वह इस दुर्घटना की विस्तृत जांच रिपोर्ट तीन सप्ताह के भीतर अदालत में पेश करे। अदालत ने यह भी स्पष्ट किया कि जांच केवल औपचारिकता न हो, बल्कि यह सुनिश्चित किया जाए कि पूरी प्रक्रिया अंतरराष्ट्रीय मानकों और स्थापित सुरक्षा प्रोटोकॉल के अनुरूप संचालित की गई है या नहीं।

सुनवाई के दौरान कोर्ट ने जांच की प्रगति पर विस्तृत जानकारी मांगी और यह जानना चाहा कि क्या तकनीकी परीक्षण, डेटा विश्लेषण और अन्य प्रक्रियाएं वैश्विक विमानन मानकों के तहत की गई हैं। अदालत ने संकेत दिया कि इस तरह की गंभीर दुर्घटनाओं में पारदर्शिता और जवाबदेही सर्वोपरि है, ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकी जा सके।

सरकार की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने अदालत को बताया कि AAIB की जांच अंतिम चरण में है। उन्होंने कहा कि दुर्घटना के कुछ तकनीकी पहलुओं की जांच विदेशों में विशेष प्रयोगशालाओं और विशेषज्ञ संस्थानों के सहयोग से की जानी आवश्यक थी, जिसके कारण समय लगा। सरकार ने भरोसा दिलाया कि तीन सप्ताह के भीतर पूरी रिपोर्ट सीलबंद लिफाफे में अदालत के समक्ष प्रस्तुत कर दी जाएगी। इसके साथ एक विस्तृत हलफनामा भी दाखिल किया जाएगा, जिसमें अब तक अपनाई गई जांच प्रक्रिया और अंतरराष्ट्रीय सहयोग का पूरा विवरण होगा।

इस मामले में याचिकाकर्ता संस्था 'सेफ्टी मैटर्स फाउंडेशन' की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता प्रशांत भूषण ने बोइंग 787-8 विमान मॉडल की सुरक्षा पर गंभीर सवाल उठाए। उन्होंने अदालत में तर्क दिया कि इस मॉडल से जुड़ी तकनीकी चिंताएं पहले भी सामने आ चुकी हैं और हजारों पायलटों ने इसकी सुरक्षा को लेकर आशंकाएं व्यक्त की हैं। उनका कहना था कि जब तक जांच पूरी नहीं हो जाती, तब तक इन विमानों को उड़ान से अस्थायी रूप से रोक दिया जाना चाहिए, ताकि यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके। भूषण ने यह भी दलील दी कि इतनी बड़ी त्रासदी की जांच केवल AAIB तक सीमित नहीं रहनी चाहिए, बल्कि एक स्वतंत्र और समानांतर जांच की व्यवस्था भी होनी चाहिए, जिससे निष्पक्षता और विश्वसनीयता बनी रहे। उनका तर्क था कि विमानन सुरक्षा से जुड़े मामलों में अधिकतम पारदर्शिता और बहु-स्तरीय जांच आवश्यक है।

सुप्रीम कोर्ट ने फिलहाल विमानों को ग्राउंड करने के संबंध में कोई अंतरिम आदेश पारित नहीं किया, लेकिन यह स्पष्ट किया कि सुरक्षा से जुड़े सभी पहलुओं की गंभीरता से समीक्षा की जाएगी। अदालत ने कहा कि रिपोर्ट मिलने के बाद ही आगे की दिशा तय की जाएगी।

यह मामला न केवल एक दुर्घटना की जांच तक सीमित है, बल्कि भारत में विमानन सुरक्षा मानकों, नियामक ढांचे और अंतरराष्ट्रीय सहयोग की प्रभावशीलता से भी जुड़ा है। सुप्रीम कोर्ट की सक्रियता से यह संकेत मिलता है कि न्यायपालिका इस मुद्दे को अत्यंत गंभीरता से देख रही है और यह सुनिश्चित करना चाहती है कि भविष्य में यात्रियों की सुरक्षा से कोई समझौता न हो। अब सबकी नजरें तीन सप्ताह बाद पेश की जाने वाली AAIB की रिपोर्ट पर टिकी हैं, जो इस हादसे के कारणों और जिम्मेदारियों पर महत्वपूर्ण प्रकाश डाल सकती है।

ब्रैंडमैन रिटेल की बाजार में जोरदार शुरुआत, शेयरों में अपर सर्किट

(जीएनएस)। नई दिल्ली। इंटरनेशनल स्पोर्ट्स और लाइफस्टाइल ब्रांड्स की मार्केटिंग और डिस्ट्रीब्यूशन से जुड़ी ब्रैंडमैन रिटेल लिमिटेड ने शेयर बाजार में शानदार शुरुआत करते हुए निवेशकों का भरोसा मजबूत किया है। कंपनी के शेयरों ने एनएसई के एसएमई प्लेटफॉर्म पर प्रीमियम के साथ लिस्ट होकर पहले ही दिन दमदार प्रदर्शन किया। 176 रुपये के इश्यू प्राइस वाले शेयर 183 रुपये पर सूचीबद्ध हुए, जो लगभग 4 प्रतिशत की बढ़त को दर्शाता है। लिस्टिंग के तुरंत बाद शेयरों में तेज खरीदारी देखने को मिली और यह 192.15 रुपये के अपर सर्किट स्तर तक पहुंच गए। इस तरह पहले ही कारोबारी दिन निवेशकों को करीब 9 प्रतिशत से अधिक का लाभ प्राप्त हुआ।

बाजार विशेषज्ञों का मानना है कि कंपनी की ब्रांड पोजिशनिंग, मजबूत वितरण नेटवर्क और बढ़ती लाइफस्टाइल मांग ने निवेशकों के बीच सकारात्मक धारणा बनाई है। लिस्टिंग के दिन आई तेज खरीदारी यह संकेत देती है कि निवेशक कंपनी की विकास संभावनाओं को लेकर आशावादी हैं। एसएमई प्लेटफॉर्म पर इस तरह की मजबूत एंट्री कंपनी के भविष्य के विस्तार योजनाओं के लिए भी सकारात्मक संकेत मानी जा रही है।

ब्रैंडमैन रिटेल का 86 करोड़ रुपये का आईपीओ 4 से 6 फरवरी के बीच खुला था और इसे निवेशकों की ओर से जबरदस्त प्रतिक्रिया मिली। कुल मिलाकर यह इश्यू 114.48 गुना सब्सक्राइब हुआ, जो बाजार में इसकी लोकप्रियता को दर्शाता है। क्वालिफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (QIB) श्रेणी में 85.24 गुना, नॉन-इंस्टीट्यूशनल निवेशकों (NII) के हिस्से में 202.98 गुना और रिटेल निवेशकों के कोटे में 93.12 गुना सब्सक्रिप्शन दर्ज किया गया। इतनी ऊंची सब्सक्रिप्शन दर से स्पष्ट है कि कंपनी को विभिन्न श्रेणियों के निवेशकों का व्यापक समर्थन मिला।

कंपनी ने इस इश्यू के तहत 10 रुपये फेस वैल्यू वाले 48.91 लाख नए इक्विटी शेयर जारी किए हैं। आईपीओ से प्राप्त धनराशि का उपयोग मुख्य रूप से वर्किंग कैपिटल की जरूरतों को पूरा करने, परिचालन क्षमता बढ़ाने और सामान्य कॉर्पोरेट उद्देश्यों के लिए किया जाएगा। प्रबंधन का कहना है कि यह पूंजी कंपनी को अपने ब्रांड पोर्टफोलियो का विस्तार करने और नए बाजारों में प्रवेश करने में मदद करेगी।

वित्तीय प्रदर्शन की बात करें तो कंपनी की स्थिति लगातार मजबूत होती दिखाई दे रही है। प्रॉस्पेक्टस के अनुसार वित्त वर्ष 2024-25 में कंपनी का शुद्ध लाभ 153.33 प्रतिशत बढ़कर 20.95 करोड़ रुपये हो गया, जो पिछले वर्ष की तुलना में उल्लेखनीय वृद्धि है। इसी अवधि में कुल आय 10.37 प्रतिशत बढ़कर 136.30 करोड़ रुपये तक पहुंच गई। लाभ में आई तेज वृद्धि यह संकेत देती है कि कंपनी ने लागत प्रबंधन और राजस्व विस्तार दोनों मोर्चों पर बेहतर प्रदर्शन किया है।

चालू वित्त वर्ष में भी कंपनी का प्रदर्शन संतोषजनक बना हुआ है। अप्रैल से दिसंबर 2025 की अवधि में कंपनी ने 19.67 करोड़ रुपये का शुद्ध लाभ अर्जित किया है, जबकि कुल आय 97.21 करोड़ रुपये रही। यह आंकड़े दर्शाते हैं कि कंपनी की विकास गति बरकरार है और मांग में स्थिरता बनी हुई है। दिसंबर 2025 के अंत तक कंपनी पर 15.68 करोड़ रुपये का कर्ज था, जबकि उसके रिजर्व और सरप्लस 46.70 करोड़ रुपये रहे, जो संतुलित वित्तीय संरचना का संकेत है।

विश्लेषकों का मानना है कि स्पोर्ट्स और लाइफस्टाइल उत्पादों की बढ़ती मांग, शहरीकरण और युवा आबादी की बदलती पसंद कंपनी के लिए दीर्घकालिक अवसर प्रदान कर सकती है। हालांकि, प्रतिस्पर्धा और उपभोक्ता मांग में उतार-चढ़ाव जैसे जोखिम भी बने रहते हैं। निवेशकों को कंपनी के भविष्य के प्रदर्शन, विस्तार योजनाओं और बाजार की स्थितियों पर नजर बनाए रखनी होगी।

कुल मिलाकर, ब्रैंडमैन रिटेल की शेयर बाजार में दमदार एंट्री ने यह संकेत दिया है कि निवेशक कंपनी की विकास क्षमता को लेकर आशान्वित हैं। पहले ही दिन अपर सर्किट तक पहुंचना बाजार में मजबूत मांग और सकारात्मक भावना को दर्शाता है।

सोना वायदा में 2526 रुपये और चांदी वायदा में 14951 रुपये का ऊछाल: क्रूड ऑयल वायदा 92 रुपये तेज

(जीएनएस)। मुंबईः देश के अग्रणी कमोडिटी डेरिवेटिव्स एक्सचेंज एमसीएक्स पर कमोडिटी वायदा, ऑप्शंस और इंडेक्स फ्यूचर्स में 118348.58 करोड़ रुपये का टर्नओवर दर्ज हुआ। कमोडिटी वायदाओं में 22305.23 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ, जबकि कमोडिटी ऑप्शंस में 96041.45 करोड़ रुपये का नॉशनल टर्नओवर हुआ। बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स का फरवरी वायदा 39740 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था। कमोडिटी ऑप्शंस में कुल प्रीमियम टर्नओवर 2115.82 करोड़ रुपये का हुआ।

कीमती धातुओं में सोना-चांदी के वायदाओं में 17178.46 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। एमसीएक्स सोना अप्रैल वायदा सत्र के आरंभ में 158436 रुपये के भाव पर खूलकर, 159511 रुपये के दिन के उच्च और 157560 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 156803 रुपये के पिछले बंद के सामने 2526 रुपये या 1.61 फीसदी के ऊछाल के साथ 159329 रुपये प्रति 10 ग्राम के भाव पर कारोबार कर रहा था। गोल्ड-गिनी फरवरी वायदा 1092 रुपये या 0.85 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 129556 रुपये प्रति 8 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-पेटल फरवरी वायदा 164 रुपये या 1.02 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 16220 रुपये प्रति 1 ग्राम पर आ गया। सोना-मिनी मार्च वायदा 155900 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 157499 रुपये और नीचे में 155626 रुपये पर पहुंचकर, 2111 रुपये या 1.36 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 157031 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया। गोल्ड-टेन फरवरी वायदा प्रति 10 ग्राम 158532 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 159900 रुपये और नीचे में 158432 रुपये पर पहुंचकर, 157951 रुपये के पिछले बंद के सामने 1689 रुपये या 1.07 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 159640 रुपये प्रति 10 ग्राम पर आ गया। चांदी के वायदाओं में चांदी मार्च वायदा सत्र के आरंभ में 257938 रुपये के भाव पर खूलकर, 267699 रुपये के दिन के उच्च और 257938 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 252548 रुपये के पिछले बंद के सामने 14951 रुपये या 5.92 फीसदी की तेजी के संग 267499 रुपये प्रति किलो हुआ। इनके अलावा चांदी-मिनी फरवरी वायदा 14019 रुपये या 5.39 फीसदी की बढ़त के साथ 273954 रुपये प्रति किलो के भाव पर कारोबार कर रहा था। जबकि चांदी-माइक्रो फरवरी वायदा 14114 रुपये या 5.43 फीसदी की तेजी

▶▶ कमोडिटी वायदाओं में 22305.23 करोड़ रुपये और कमोडिटी ऑप्शंस में 96041.45 करोड़ रुपये का दर्ज हुआ टर्नओवर: सोना-चांदी के वायदाओं में 17178.46 करोड़ रुपये का हुआ कारोबार: बुलियन इंडेक्स बुलडेक्स फ्यूचर्स 39740 पॉइंट के स्तर पर

के संग 273876 रुपये प्रति किलो के भाव पर पहुंचा। मेटल वर्ग में 3127.67 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। तांबा फरवरी वायदा 27.7 रुपये या 2.25 फीसदी बढ़कर 1261.35 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि जस्ता फरवरी वायदा 5.35 रुपये या 1.64 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 331.1 रुपये प्रति किलो पर आ गया। इसके सामने एल्यूमीनियम फरवरी वायदा 3.85 रुपये या 1.24 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 315.35 रुपये प्रति किलो पर आ गया। जबकि सीसा फरवरी वायदा 1.2 रुपये या 0.64 फीसदी तेज होकर यह कॉन्ट्रैक्ट 189.9 रुपये प्रति किलो पर आ गया।

इन जिंसों के अलावा कारोबारियों ने एनर्जी सेगमेंट में 1981.21 करोड़ रुपये के सौदे किए। एमसीएक्स क्रूड ऑयल फरवरी वायदा 5844 रुपये पर खूलकर, ऊपर में 5915 रुपये और नीचे में 5828 रुपये पर पहुंचकर, 92 रुपये या 1.59 फीसदी बढ़कर 5892 रुपये प्रति बैरल के भाव पर ट्रेड हो रहा था। जबकि क्रूड ऑयल-मिनी फरवरी वायदा 93 रुपये या 1.6 फीसदी की तेजी के संग 5895 रुपये प्रति बैरल के भाव पर पहुंचा। इनके अलावा नैचुरल गैस फरवरी वायदा सत्र के आरंभ में 284 रुपये के भाव पर खूलकर, 286.2 रुपये के दिन के उच्च और 280.1 रुपये के नीचले स्तर को छूकर, 288.7 रुपये के पिछले बंद के सामने 5.2 रुपये या 1.8 फीसदी गिरकर 283.5 रुपये प्रति एमएमबीटीयू हुआ। जबकि नैचुरल गैस-मिनी फरवरी वायदा 5.1 रुपये या 1.77 फीसदी औंधकर 283.7 रुपये प्रति एमएमबीटीयू पर आ गया।

कृषि जिंसों में मेंथा ऑयल फरवरी वायदा 967.2 रुपये पर खूलकर, 3 रुपये या 0.31 फीसदी घटकर 966 रुपये प्रति किलो के भाव पर ट्रेड हो रहा था।

कारोबार की दृष्टि से एमसीएक्स पर सोना के विभिन्न अनुबंधों में 8836.90 करोड़ रुपये और चांदी के विभिन्न अनुबंधों में 8341.57 करोड़ रुपये की खरीद बेच की गई। इसके अलावा तांबा के वायदाओं में 2376.30 करोड़ रुपये, एल्यूमीनियम और एल्यूमीनियम-मिनी के वायदाओं में 266.64 करोड़ रुपये, सीसा और सीसा-मिनी के वायदाओं में 13.86 करोड़ रुपये, जस्ता और जस्ता-मिनी के वायदाओं में 470.87 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ। इन जिंसों के अलावा क्रूड ऑयल और क्रूड ऑयल-मिनी के वायदाओं में 919.09 करोड़ रुपये के ट्रेड दर्ज हुए। जबकि नैचुरल गैस और नैचुरल गैस-मिनी के वायदाओं में 1044.44 करोड़ रुपये का कारोबार हुआ।

ओपन इंटरेस्ट सोना के वायदाओं में 8991 लोट, सोना-मिनी के वायदाओं में 63467 लोट, गोल्ड-गिनी के वायदाओं में 31633 लोट, गोल्ड-पेटल के वायदाओं में 425100 लोट और गोल्ड-टेन के वायदाओं में 54096 लोट के स्तर पर था। जबकि चांदी के वायदाओं में 8810 लोट, चांदी-मिनी के वायदाओं में 19135 लोट और चांदी-माइक्रो वायदाओं में 61588 लोट के स्तर पर था। क्रूड ऑयल के वायदाओं में 20440 लोट और नैचुरल गैस के वायदाओं में 24399 लोट के स्तर पर था।

इंडेक्स फ्यूचर्स में बुलडेक्स फरवरी वायदा 39197 पॉइंट पर खूलकर, 39787 के उच्च और 39197 के नीचले स्तर को छूकर, 680 पॉइंट बढ़कर 39740 पॉइंट के स्तर पर कारोबार हो रहा था।

कमोडिटी ऑप्शंस ऑन फ्यूचर्स में क्रूड ऑयल फरवरी 5900 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति बैरल 26.9 रुपये की बढ़त के साथ 159 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस फरवरी 280 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 2.45 रुपये की गिरावट के साथ 19.6 रुपये हुआ।

सोना फरवरी 200000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 36 रुपये की बढ़त के साथ 246 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी फरवरी 300000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 2401.5 रुपये की बढ़त के साथ 6825 रुपये हुआ। तांबा फरवरी 1300 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 11.92 रुपये की बढ़त के साथ 20.65 रुपये हुआ। जस्ता फरवरी 350 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का कॉल ऑप्शन प्रति किलो 78 पैसे के सुधार के साथ 1.29 रुपये हुआ।

पुट ऑप्शंस में क्रूड ऑयल फरवरी 5800 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति बैरल 52.1 रुपये की गिरावट के साथ 115.6 रुपये हुआ। जबकि नैचुरल गैस फरवरी 280 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति एमएमबीटीयू 2.15 रुपये की बढ़त के साथ 15.55 रुपये हुआ।

सोना फरवरी 155000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति 10 ग्राम 1229 रुपये की गिरावट के साथ 2811 रुपये हुआ। इसके सामने चांदी फरवरी 260000 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 7137 रुपये की गिरावट के साथ 14016.5 रुपये हुआ। तांबा फरवरी 1200 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 4.37 रुपये की गिरावट के साथ 9.12 रुपये हुआ। जस्ता मार्च 277.5 रुपये की स्ट्राइक प्राइस का पुट ऑप्शन प्रति किलो 42 पैसे की नरमी के साथ 0.11 रुपये हुआ।

विद्यार्थियों के सपनों को मिली नई उड़ान, करियर मार्गदर्शन से जागी जागरूकता

(जीएनएस)। राजकोट के प्रतिष्ठित श्री लाल बहादुर शास्त्री बॉयज़ विद्यालय के हायर सेकेंडरी विभाग में उस समय उत्साह और जिज्ञासा का विशेष वातावरण देखने को मिला, जब विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य को दिशा देने के उद्देश्य से एक विस्तृत एजुकेशनल करियर गाइडेंस सेमिनार का आयोजन किया गया। विद्यालय परिसर में आयोजित इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्रों को 10वीं और 12वीं के बाद उपलब्ध शैक्षणिक, व्यावसायिक तथा प्रतिस्पर्धात्मक अवसरों की स्पष्ट और प्रामाणिक जानकारी प्रदान करना था, ताकि वे अपने जीवन के महत्वपूर्ण निर्णय सोच-समझकर ले सकें।

आज के प्रतिस्पर्धी दौर में करियर का चयन केवल अंकों के आधार पर नहीं, बल्कि रुचि, योग्यता, व्यक्तित्व और अवसरों की सही समझ पर निर्भर करता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए विद्यालय प्रबंधन ने विभिन्न विभागों के विशेषज्ञों को आमंत्रित किया, जिन्होंने विद्यार्थियों को मार्गदर्शन देने के साथ-साथ उनके मन में उठ रहे अनेक प्रश्नों का समाधान भी किया। कार्यक्रम में असिस्टेंट डायरेक्टर एम्प्लॉयमेंट ऑफिस, राजकोट रीजनल इन्फॉर्मेशन ऑफिस तथा समग्र शिक्षा अभियान के प्रतिनिधियों की उपस्थिति ने सेमिनार को अत्यंत प्रभावशाली बना दिया।

एम्प्लॉयमेंट ऑफिस की करियर काउंसलर तन्वीबेन त्रिवेदी ने अपने प्रेरणादायक वक्तव्य में विद्यार्थियों को बताया कि 10वीं और 12वीं के बाद केवल पारंपरिक धाराएं ही नहीं, बल्कि अनेक व्यावसायिक और कौशल आधारित कोर्स भी उपलब्ध हैं, जो उन्हें शीघ्र

रोजगार की दिशा में अग्रसर कर सकते हैं। उन्होंने विज्ञान, वाणिज्य और कला संकाय के अंतर्गत आने वाले विभिन्न स्नातक कोर्सों के साथ-साथ आईटीआई, पॉलिटेक्निक, पैरामेडिकल, होटल मैनेजमेंट, फैशन डिजाइनिंग, एनीमेशन, डिजिटल मार्केटिंग जैसे उभरते क्षेत्रों की विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने विद्यार्थियों को यह भी समझाया कि सरकारी और निजी क्षेत्र में उपलब्ध नौकरियों के लिए किस प्रकार की तैयारी आवश्यक होती है और किस तरह एम्प्लॉयमेंट ऑफिस युवाओं को पंजीकरण, मार्गदर्शन और रोजगार मेलों के माध्यम से सहयोग प्रदान करता है।

तन्वीबेन ने प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के महत्व पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने जीपीएससी, यूपीएससी, बैंकिंग, रेलवे, एसएससी तथा अन्य राज्य स्तरीय परीक्षाओं के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि नियमित अध्ययन, सही दिशा और समय प्रबंधन से सफलता प्राप्त की जा सकती है। उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि वे अपने लक्ष्य को स्पष्ट रखें और उसी के अनुरूप तैयारी की रणनीति बनाएं।

इसके बाद राजकोट रीजनल इन्फॉर्मेशन ऑफिस के सीनियर सब एडिटर जितेंद्र निमावत ने विद्यार्थियों को सूचना एवं प्रसारण विभाग द्वारा प्रकाशित विभिन्न उपयोगी प्रकाशनों के बारे में अवगत कराया। उन्होंने 'रोजगार समाचार' और 'गुजरात फोर्टनाइटली' जैसी पत्रिकाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि इन प्रकाशनों में सरकारी नौकरियों, योजनाओं, छात्रवृत्तियों तथा समसामयिक घटनाओं की प्रमाणिक जानकारी उपलब्ध होती है। उन्होंने विद्यार्थियों को नियमित रूप से इन पत्रिकाओं का अध्ययन करने की प्रेरणा दी, जिससे वे देश-प्रदेश में हो रही गतिविधियों से जुड़े रहें और प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी में भी लाभ उठा सकें।

निमावत ने यह भी बताया कि सूचना का सही स्रोत बहुत महत्वपूर्ण होता है। आज के डिजिटल युग में सोशल मीडिया और इंटरनेट पर अनेक अप्रमाणित जानकारियां भी उपलब्ध होती हैं, जिनसे भ्रम की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। इसलिए विद्यार्थियों को आधिकारिक वेबसाइटों और विश्वसनीय प्रकाशनों से ही जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। उन्होंने छात्रों को जागरूक नागरिक बनने और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझने की प्रेरणा भी दी। समग्र शिक्षा अभियान की करियर काउंसलर डॉ. कर्तवी भट्ट ने अपने संबोधन में विद्यार्थियों के मानसिक और भावनात्मक विकास पर विशेष जोर दिया। उन्होंने शैक्षिक मनोविज्ञान के माध्यम से समझाया कि हर विद्यार्थी की सीखने की शैली अलग होती है और तुलना के बजाय आत्मविश्लेषण अधिक आवश्यक है। उन्होंने परीक्षा के समय होने वाले तनाव, असफलता के डर और भविष्य की चिंता से निपटने के प्रभावी उपाय बताए।

डॉ. भट्ट ने विद्यार्थियों को बताया कि लक्ष्य निर्धारण करते समय अपनी रुचि और क्षमता को प्राथमिकता दें। उन्होंने कहा कि असफलता अंत नहीं, बल्कि सीखने का अवसर है। यदि कोई परीक्षा या प्रयास अपेक्षा के अनुरूप परिणाम न दे, तो उससे निराश होने के बजाय कारणों का विश्लेषण कर पुनः प्रयास करना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों को ध्यान, सकारात्मक सोच और नियमित दिनचर्या अपनाने की सलाह दी, जिससे वे मानसिक रूप से मजबूत बन सकें।

कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों ने भी उत्साहपूर्वक प्रश्न पूछे और विशेषज्ञों से अपने संदेह दूर किए। कुछ छात्रों ने विभिन्न करियर विकल्पों के चयन को लेकर मार्गदर्शन मांगा, तो कुछ ने प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी की रणनीति के बारे में जानकारी प्राप्त की। विशेषज्ञों ने धैर्यपूर्वक प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देते हुए विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ाया।

विद्यालय के प्रधानाचार्य अल्पेशभाई भंडेरी ने अपने संबोधन में कहा कि शिक्षा केवल पाठ्यपुस्तकों तक सीमित नहीं है, बल्कि जीवन की वास्तविकताओं को समझना भी उतना ही आवश्यक है। उन्होंने कहा कि ऐसे सेमिनार विद्यार्थियों को सही दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने सभी विशेषज्ञों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके मार्गदर्शन से विद्यार्थियों को अपने भविष्य की स्पष्ट रूपरेखा बनाने में सहायता मिलेगी। कार्यक्रम में शिक्षिका हजुमांबेन मकरानी, शिल्पाबेन, किशनभाई, हर्षदभाई खाखर, निलेशभाई पटेल सहित विद्यालय के अन्य शिक्षकगण भी उपस्थित रहे। शिक्षकों ने विद्यार्थियों को प्रेरित किया कि वे इस अवसर का पूर्ण लाभ उठाएं और प्राप्त जानकारी को अपने जीवन में लागू करें। बड़ी संख्या में उपस्थित विद्यार्थियों ने पूरे कार्यक्रम के दौरान गहरी रुचि दिखाई और अंत तक ध्यानपूर्वक सभी वक्ताओं को सुना।

सेमिनार के समापन पर विद्यालय प्रबंधन की ओर से सभी अतिथियों का सम्मान किया गया और आभार प्रकट किया गया। विद्यार्थियों के चेहरों पर दिखाई दे रहा आत्मविश्वास इस बात का प्रमाण था कि यह आयोजन उनके लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हुआ। इस प्रकार का मार्गदर्शन न केवल छात्रों को करियर चुनने में सहायता करता है, बल्कि उन्हें आत्मनिर्भर और जागरूक नागरिक बनने की दिशा में भी प्रेरित करता है।

राजकोट के इस विद्यालय में आयोजित यह सेमिनार विद्यार्थियों के लिए एक प्रेरणादायी पहल साबित हुआ, जिसने उन्हें अपने सपनों को साकार करने के लिए सही मार्ग पर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी।

ग्रामीण विकास को नई रफ्तार देगा 'जी-राम जी' मिशन, 125 दिन रोजगार और डिजिटल पारदर्शिता से बदलेगी गांवों की तस्वीर

(जीएनएस)। सिलवासा। दादरा नगर हवेली के जिला पंचायत कार्यालय में आयोजित एक महत्वपूर्ण प्रेस कॉन्फ्रेंस के दौरान जिला पंचायत सीईओ ने "जी-राम-जी" अर्थात ग्रामीण रोजगार एवं आजीविका मिशन योजना की विस्तृत जानकारी साझा करते हुए इसे ग्रामीण विकास की दिशा में एक बड़ा और दूरगामी कदम बताया। उन्होंने कहा कि यह योजना पूर्व में संचालित मनरेगा का उन्नत, अधिक पारदर्शी और तकनीकी रूप है, जिसका उद्देश्य केवल रोजगार उपलब्ध कराना ही नहीं, बल्कि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को स्थायी आधार देना और विकास कार्यों को परिणामोन्मुख बनाना है।

सीईओ ने बताया कि जी-राम-जी योजना के तहत ग्रामीण परिवारों को वर्ष में 125 दिनों का रोजगार सुनिश्चित किया जाएगा, जो पूर्व की व्यवस्था की तुलना में अधिक व्यापक अवसर प्रदान करेगा। यदि किसी पात्र परिवार को निर्धारित समयावधि में काम उपलब्ध नहीं कराया जाता है तो उसे बेरोजगारी भत्ता भी दिया जाएगा। मजदूरी भुगतान की प्रक्रिया को पूरी तरह डिजिटल बनाया गया है, जिससे समय पर सीधे श्रमिकों के बैंक खातों में राशि हस्तांतरित की जा सके। बायोमेट्रिक उपस्थिति, जियो-टैगिंग और डिजिटल मॉनिटरिंग जैसी व्यवस्थाएं लागू की गई हैं ताकि किसी भी

प्रकार की अनियमितता या फर्जीवाड़े की संभावना को समाप्त किया जा सके।

उन्होंने स्पष्ट किया कि जहां मनरेगा मुख्य रूप से सड़क निर्माण, तालाब खुदाई और अन्य कच्चे निर्माण कार्यों तक सीमित रही, वहीं जी-राम-जी योजना का दायरा कहीं अधिक व्यापक और दूरदर्शी है। इसमें जल संरक्षण, कृषि विकास, ग्रामीण आधारभूत ढांचे के सुदृढ़ीकरण, स्वयं सहायता समूहों के सशक्तिकरण और स्थायी आजीविका के अवसरों को प्राथमिकता दी गई है। योजना का उद्देश्य केवल अस्थायी मजदूरी उपलब्ध कराना नहीं, बल्कि गांवों में ऐसी परिसंपत्तियों का निर्माण करना है जो लंबे समय तक आय और रोजगार का स्रोत बन सकें।

सीईओ ने बताया कि योजना को चार प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया गया है, जिनमें जल सुरक्षा और संरक्षण, ग्रामीण अवसंरचना विकास, आजीविका संवर्धन तथा जलवायु परिवर्तन और प्रतिकूल मौसम की चुनौतियों से निपटने वाले कार्य शामिल हैं। जल संरक्षण के अंतर्गत वर्षा जल संचयन, चेकडैम, तालाब गहरीकरण और सिंचाई संरचनाओं का निर्माण किया जाएगा। ग्रामीण अवसंरचना के तहत संपर्क मार्ग, सामुदायिक भवन और अन्य आवश्यक सुविधाओं का विकास होगा। आजीविका संवर्धन के अंतर्गत स्वयं सहायता समूहों को प्रशिक्षण, संसाधन और विपणन सहयोग दिया जाएगा, जिससे महिलाएं और युवा आत्मनिर्भर बन सकें। वहीं जलवायु परिवर्तन से जुड़े कार्यों में वृक्षारोपण, मृदा संरक्षण और आपदा प्रबंधन संबंधी गतिविधियां शामिल होंगी।

उन्होंने यह भी कहा कि योजना के माध्यम से ग्राम पंचायतों और मुखियाओं को अधिक प्रशासनिक अधिकार और जिम्मेदारी दी जा रही है, जिससे स्थानीय स्तर पर योजनाओं का निर्माण और क्रियान्वयन अधिक प्रभावी हो सके। ग्राम स्तर पर ही आवश्यकताओं की पहचान कर प्राथमिकता तय की जाएगी, जिससे विकास कार्य वास्तविक जरूरतों के अनुरूप हों। इससे न केवल कार्यों की गति तेज होगी, बल्कि पारदर्शिता और जवाबदेही भी सुनिश्चित होगी।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस द्वारा डेयरी क्षेत्र को नई दिशा देने वाले 'अमूल एआई' का लोकार्पण किया

▶▶ गुजरात विधानसभा अध्यक्ष श्री शंकरभाई चौधरी, कृषि मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी तथा अन्य मंत्रियों की विशेष उपस्थिति

▶▶ 'अमूल एआई' प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में कृषि, पशुपालन एवं डेयरी क्षेत्र को आधुनिक तथा आत्मनिर्भर बनाने का माइलस्टोन बनेगा : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल

▶▶ सरकार, सहकार तथा टेक्नोलॉजी की त्रिवेणी से आधुनिक विकास की गति अनेक गुना बढ़ी है

▶▶ तीन कर्तव्यों पर आधारित इस वर्ष के केन्द्रीय बजट में दूध उत्पादकों के हितों को केन्द्र में रखकर अनेक महत्वपूर्ण प्रावधान किए गए हैं

▶▶ केन्द्रीय बजट में डेयरी इको सिस्टम को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से 20 हजार वेटरनरी प्रोफेशनल्स तैयार करने के लिए विशेष फंड का प्रावधान

▶▶ वैश्विक ट्रेड डील से देश के डेयरी सेक्टर को लाभ, भारत विश्व की डेयरी बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ेगा

(जीएनएस)। गांधीनगर : मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) द्वारा डेयरी क्षेत्र को नई दिशा देने वाले 'अमूल एआई' का बुधवार को लोकार्पण करते हुए स्पष्ट रूप से कहा कि यह 'अमूल एआई' प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में कृषि, पशुपालन एवं डेयरी क्षेत्र को आधुनिक तथा आत्मनिर्भर बनाने का माइलस्टोन बनेगा। आणंद में बुधवार को राज्य के 18,500 से अधिक गाँवों में 36 लाख दूध उत्पादकों की सहकारी संस्था, विश्व की अग्रणी सहकारी संस्था तथा डेयरी ब्रैंड के रूप में ख्याति प्राप्त अमूल द्वारा किसान से टेक्नोलॉजी तक सहकारिता को स्मार्ट बनाने वाली नवीन 'अमूल एआई' क्रांति का शुभारंभ समारोह आयोजित हुआ।

मुख्यमंत्री ने गुजरात विधानसभा के अध्यक्ष तथा बनास डेयरी के अध्यक्ष श्री शंकरभाई चौधरी, कृषि मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी, खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री श्री रमणभाई सोलंकी, वित्त राज्य मंत्री श्री कमलेशभाई पटेल और गुजरात राज्य दुग्ध विपणन परिसंघ (जीएसएमएमएफ) के अध्यक्ष एवं पदाधिकारियों की उपस्थिति में 'अमूल एआई' का लोकार्पण किया।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की विजनरी लीडरशिप में पिछले 11 वर्षों में देश की आर्थिक विकास यात्रा तेज गति से आगे बढ़ी है, जिसमें टेक्नोलॉजी का महत्वपूर्ण योगदान है।

इस संदर्भ में उन्होंने डिजिटल पेमेंट ट्रांजेक्शन की सफलता का उदाहरण देते हुए जोड़ा कि जब प्रधानमंत्री ने देश में डिजिटल ट्रांजेक्शन की शुरुआत कराई, तब सबके मन में सवाल था कि यह किस प्रकार सफल होगा ? आज भारत यूपीआई ट्रांजेक्शन में अग्रसर बन गया है और छोटे से छोटे व्यापारी, सब्जी के ठेले, चाय की टपरी तक के छोटे लोग भी डिजिटल ट्रांजेक्शन का उपयोग करने लगे हैं। यह इसकी विशिष्ट सफलता है।

उन्होंने प्रधानमंत्री द्वारा 21वीं शताब्दी के अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी युग में एआई आधारित विकास के लिए अनेक पहलें की गईं होने का विशेष उल्लेख करते हुए जोड़ा कि सरकार, सहकार तथा टेक्नोलॉजी की त्रिवेणी से आधुनिक विकास की गति अनेक गुना बढ़ गई है। इसे अब एआई और सुदृढ़ बनाएगा।

मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री ने हमेशा छोटे व्यक्तियों, ग्रामीण किसानों तथा पशुपालकों के हितों का विचार कर उन्हें विकास की मुख्य धारा में लाने का ही ध्येय रखा है। उनके नेतृत्व में तीन कर्तव्यों पर आधारित इस वर्ष के केन्द्रीय बजट में भी दूध उत्पादकों के हितों को केन्द्र में रखकर अनेक महत्वपूर्ण प्रावधान किए गए हैं।

उन्होंने कहा कि इतना ही नहीं; केन्द्रीय बजट में डेयरी इको सिस्टम को मजबूत करने के उद्देश्य से 20 हजार वेटरनरी प्रोफेशनल्स तैयार करने के लिए विशेष फंड का भी प्रावधान किया गया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि अमूल ने अपने सभासदों तथा दूध उत्पादकों को अधिक आय मिले; ऐसी नवीनतम टेक्नोलॉजी का उपयोग डिजिटल क्रांति से किया है। अमूल अपने सुविकसित विशिष्ट आईटी सिस्टम में पशुपालकों, दूध उत्पादकों तथा सभासदों का जो डेटाबेस है, उसे एकीकृत कर अब 'अमूल एआई' से एडवांटेज इंडिया के लिए सज्ज हुआ है।

श्री भूपेंद्र पटेल ने कहा कि प्रधानमंत्री के विजन से हाल ही में अमेरिका तथा यूरोपीय संघ (ईयू) के साथ हुई ट्रेड डील डेयरी क्षेत्र के लिए लाभदायी होगी। उन्होंने इस संबंध में विस्तार से भूमिका देते हुए कहा कि इस डील में डेयरी उत्पादों के निर्यात को बाहर रखने के प्रधानमंत्री के विशिष्ट निर्णय से देश में दूध उत्पादन पर निर्भर 10 करोड़ से अधिक छोटे एवं सीमांत किसानों का जीवन निर्वाह सुरक्षित रहेगा।

मुख्यमंत्री ने विश्वास दर्शाया कि इस स्वागत योग्य ट्रेड डील के परिणामस्वरूप प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में देश का डेयरी सेक्टर दूध उत्पादन बढ़ाकर विश्व की डेयरी बनने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ेगा।

उन्होंने विकसित भारत@2047 के लिए स्वदेशी व आत्मनिर्भर टेक्नोलॉजी से ग्लोबल सॉल्यूशन देने की दिशा में 'अमूल एआई' को ठोस कदम बताया। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि नई टेक्नोलॉजी तथा इनोवेशन आगामी समय में इकोनॉमी की ड्राइविंग फोर्स बनेंगे; जिसमें ग्रामीण, कृषि, पशुपालन तथा दूध उत्पादन के साथ सहकारिता क्षेत्र लीड लेगा।

इस अवसर पर गुजरात विधानसभा के अध्यक्ष तथा बनास डेयरी के अध्यक्ष श्री शंकरभाई चौधरी ने अपने संबोधन में कहा कि आणंद की भूमि श्वेत क्रांति के प्रणेता त्रिभोवनदास पटेल की जन्मभूमि एवं कर्मभूमि रही है और डॉ. कुरियन की भी कर्मभूमि रही है। आज हजारों पशुपालकों की उपस्थिति में यह कार्यक्रम आयोजित हो रहा है, जो हम सबके लिए गौरव का क्षण है।

अमूल द्वारा लॉन्च किए गए नए 'सरला' (Sarala) ऐप को एक बड़ी क्रांति बताते हुए उन्होंने कहा कि अमूल ने विश्व में पहली बार दूध के फैट, ठोस रहित वसा (सॉलिड-नॉट-फैट-एसएनएफ) तथा दैनिक हिसाब मोबाइल ऐप पर देने की व्यवस्था की है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के प्रति आभार का भाव व्यक्त करते हुए श्री शंकरभाई चौधरी ने कहा कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विकसित देशों द्वारा भारत में दूध एवं डेयरी उत्पाद प्रवेश कराने के लिए भारी दबाव बनाया जा रहा था। यदि बाहर का दूध भारत में आता; तो देश के करोड़ों पशुपालक प्रभावित होते, परंतु प्रधानमंत्री ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति के विरुद्ध चट्टान बनकर खड़े रहते हुए भारतीय पशुपालकों के हितों की रक्षा की है और दूध को मुक्त व्यापार समझौतों (फ्री ट्रेड एग्रीमेंट्स-एफटीए) से बाहर रखा है।

कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री जीतूभाई वाघाणी ने इस घटना को एक ऐतिहासिक क्षण बताया। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने पशुपालन एवं डेयरी क्षेत्र के लिए जो विशेष प्रयास किए हैं, उनके परिणामस्वरूप ही आज गुजरात इस क्षेत्र में नई ऊँचाइयाँ पार कर रहा है। उन्होंने जोड़ा कि अमूल का यह एआई एप्लिकेशन विश्व का सबसे बड़ा एप्लिकेशन बनने जा रहा है, जो डिजिटल युग में गुजरात की एक अनूठी उपलब्धि है। जिस तरह लोगों ने यूपीआई तथा स्मार्टफोन को अपनाया है, उसी तरह यह एआई टेक्नोलॉजी भी पशुपालकों के जीवन का हिस्सा बनेगी।

सहकारिता क्षेत्र की चर्चा करते हुए श्री वाघाणी ने कहा कि पशुपालन केवल व्यवसाय नहीं है, बल्कि ग्रामीण समृद्धि का आधारस्तंभ है। प्रधानमंत्री ने पृथक सहकारिता मंत्रालय बनाकर तथा उसका कार्यभार श्री अमित शाह को सौंपकर इस क्षेत्र में बड़ा सुधार किया है। उन्होंने आनंद व्यक्त किया कि आज लगभग 94 प्रतिशत राशि सीधे पशुपालक बहनों के बैंक खातों में जमा होती है, जो आर्थिक समृद्धि का उत्तम उदाहरण है।

कार्यक्रम के आरंभ में मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्र पटेल ने रिमोट से 'अमूल एआई' (Amul AI) डिजिटल प्लेटफॉर्म का लोकार्पण किया। इसके बाद सभी ने 'अमूल एआई' की लघु फिल्म देखी।

इससे पहले अमूल परिसर में मुख्यमंत्री के आगमन पर अमूल के निदेशक मंडल द्वारा मुख्यमंत्री का स्वागत किया गया। कार्यक्रम के आरंभ में अमूल के अध्यक्ष ने सबका स्वागत करते हुए 'अमूल एआई' के बारे में जानकारी दी। अमूल के प्रबंध निदेशक श्री जयन मेहता ने प्रासंगिक संबोधन किया। 'अमूल एआई' ऐप बनाने वाले डॉ. शंकर ने ऐप के बारे में विस्तृत जानकारी दी। कार्यक्रम के अंत में अमूल के उपाध्यक्ष श्री गोरधनभाई धामेलिया ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया।

इस कार्यक्रम में सांसद श्री मीतेशभाई पटेल, मुख्य सचिव श्री एम. के. दास, प्रधान सचिव श्री अरुणकुमार सोलंकी, जीएसएमएमएफ के पदाधिकारी, अमूल निदेशक मंडल के सदस्य, विधायक सर्वश्री योगेशभाई पटेल, चिरागभाई पटेल, विपुलभाई पटेल, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री हसमुखभाई पटेल, अग्रणी श्री संजयभाई पटेल सहित पशुपालक महिलाएँ बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

गांधीधाम क्षेत्र से उत्तरी भारत के लिए टिंबर के रेल परिवहन को बढ़ावा देने हेतु बैठक आयोजित

(जीएनएस)। गांधीधाम में सेंट्रल वेयरहाउसिंग कॉरपोरेशन (CWC) के प्रतिनिधियों एवं रेल अधिकारियों के बीच गांधीधाम क्षेत्र से दिल्ली तथा अन्य उत्तरी क्षेत्रों के लिए टिंबर (Timber) के रेल परिवहन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई।

बैठक में अहमदाबाद मंडल के मंडल रेल प्रबंधक श्री वेद प्रकाश, वरिष्ठ मंडल परिचालन प्रबंधक डॉ. जेनिया गुप्ता, वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अनू त्यागी, गांधीधाम के क्षेत्रीय रेल प्रबंधक (ARM) श्री आशीष धानिया सहित रेलवे के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त, सेंट्रल वेयरहाउसिंग कॉरपोरेशन (CWC) के प्रतिनिधियों तथा कांडला टिम्बर एसोसिएशन के नौ सदस्यों ने भी बैठक में भाग लिया।

बैठक का मुख्य उद्देश्य टिंबर के परिवहन को सड़क मार्ग से रेल मार्ग की ओर स्थानांतरित करने के लिए प्रोत्साहित करना था। चर्चा के दौरान यह उल्लेख किया गया कि गांधीधाम क्षेत्र में लगभग 750 आरा मिलें (सॉ मिल्स) हैं, इसके बावजूद रेल मार्ग से टिंबर का परिवहन अभी बहुत कम है।

बैठक में रेल आधारित टिंबर लोडिंग को बढ़ावा देने, लॉजिस्टिक्स समन्वय को सुदृढ़ करने तथा परिचालन संबंधी चुनौतियों के समाधान हेतु विभिन्न रणनीतियों पर विचार-विमर्श किया गया।

सभी प्रतिभागियों ने टिंबर के रेल परिवहन को बढ़ावा देने के लिए आपसी समन्वय से कार्य करने की प्रतिबद्धता व्यक्त की। रेल मार्ग से लकड़ी का अधिक परिवहन होने से लॉजिस्टिक दक्षता में वृद्धि, सड़कों पर भीड़भाड़ में कमी तथा पर्यावरण के अनुकूल माल परिवहन को बढ़ावा मिलेगा।

शादी-बर्थडे में दिखावा बंद, नियम तोड़ने पर 51 हजार जुर्माना; राजस्थान आदिवासी संघ का 28 सूत्रीय सामाजिक सुधार अभियान

(जीएनएस)। डूंगरपुर। राजस्थान आदिवासी संघ ने समाज में बढ़ते आडंबर, फिजूलखर्ची और कुरीतियों पर सख्त रुख अपनाते हुए एक ऐतिहासिक निर्णय लिया है। डूंगरपुर जिले के स्थानीय डाक बंगले में आयोजित महत्वपूर्ण पत्रकार वार्ता में संघ के प्रदेश अध्यक्ष भूपत सिंह भगोरा और प्रदेश उपाध्यक्ष सुखलाल अहारी ने 28 सूत्रीय सामाजिक सुधार कार्यक्रम की घोषणा की, जिसके तहत शादी-ब्याह और अन्य सामाजिक आयोजनों में कई कड़े नियम लागू किए गए हैं। इन नियमों का उल्लंघन करने वालों पर 51,000 रुपये का जुर्माना और सामाजिक बहिष्कार तक की कार्रवाई का प्रावधान रखा गया है।

पत्रकार वार्ता को संबोधित करते हुए प्रदेश उपाध्यक्ष सुखलाल अहारी ने कहा कि आदिवासी समाज को नई दिशा देने और उसे आर्थिक, सामाजिक व नैतिक रूप से मजबूत बनाने के लिए संगठन ने युद्ध स्तर पर काम शुरू किया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि शादियों में होने वाली अनावश्यक खर्चीली परंपराओं ने कई परिवारों को कर्ज के बोझ तले दबा दिया है। इसी को ध्यान में रखते हुए अब शादी-ब्याह में अधिकतम 30 तोला चांदी और सीमित मात्रा में सोना ही मान्य होगा। नकद

लेन-देन की राशि 15,051 रुपये निर्धारित की गई है, ताकि दिखावे की होड़ पर अंकुश लगाया जा सके।

संघ ने समाज में बढ़ती आधुनिक आडंबरपूर्ण प्रवृत्तियों पर भी रोक लगाने का निर्णय लिया है। अब आदिवासी समाज में डीजे बजाने, बर्थडे पार्टी मनाने, रिंग सेरेमनी आयोजित करने और साफा प्रथा को पूर्णतः प्रतिबंधित कर दिया गया है। संगठन का मानना है कि ये प्रथाएं मूल परंपराओं से भटकाव पैदा कर रही हैं और आर्थिक बोझ बढ़ा रही हैं। शादी समारोहों में शराब पर भी सख्त पाबंदी लगाने का फैसला लिया गया है, ताकि समाज में फैल रही नशे की प्रवृत्ति को रोका जा सके और पारिवारिक वातावरण स्वस्थ बना रहे।

हालांकि संघ पदाधिकारियों ने यह भी स्पष्ट किया कि यदि कोई सक्षम परिवार निजी तौर पर सीमित दायरे में अतिरिक्त खर्च या लेन-देन करता है, तो उस पर संगठन को आपत्ति नहीं होगी, बशर्ते वह सार्वजनिक प्रदर्शन का रूप न ले। मुख्य उद्देश्य समाज में प्रतिस्पर्धात्मक दिखावे और आर्थिक असमानता से उत्पन्न तनाव को समाप्त करना है।

पत्रकार वार्ता के दौरान यह भी कहा गया कि संगठन असामाजिक तत्वों और आपराधिक गतिविधियों के खिलाफ सख्त रुख अपनाएगा। यदि कोई व्यक्ति समाज के नियमों की अवहेलना करता है या आपराधिक कृत्यों में संलिप्त पाया जाता है, तो उसके विरुद्ध कठोर कदम उठाए जाएंगे। संघ ने स्पष्ट किया कि सामाजिक अनुशासन बनाए रखना सभी सदस्यों की जिम्मेदारी है।

साथ ही, समाज के दीर्घकालिक विकास के लिए बालिका शिक्षा को विशेष प्राथमिकता दी गई है। प्रदेश उपाध्यक्ष सुखलाल अहारी ने कहा कि आदिवासी समाज का भविष्य शिक्षा पर निर्भर है और विशेष रूप से बेटियों को शिक्षित कर ही समाज को सशक्त बनाया जा सकता है। संगठन शिक्षा, नशामुक्ति और सामाजिक समरसता को अपने अभियान का मुख्य आधार बना रहा है।

राजस्थान आदिवासी संघ का यह फैसला जहां एक ओर परंपराओं के संरक्षण और सामाजिक सुधार की दिशा में बड़ा कदम माना जा रहा है, वहीं दूसरी ओर इसे समाज के भीतर अनुशासन और समानता स्थापित करने का प्रयास भी समझा जा रहा है।

राजकोट और लालकुआं के बीच चलायी जाएगी स्पेशल ट्रेन,टिकटों की बुकिंग 13 फरवरी से

(जीएनएस)। पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा के लिए विशेष किराये पर राजकोट और लालकुआं के बीच स्पेशल ट्रेन चलाने का निर्णय लिया गया है। विवरण इस प्रकार हैः

ट्रेन संख्या 05046/05045 राजकोट-लालकुआं साप्ताहिक स्पेशल [10 फेरे]

ट्रेन संख्या 05046 राजकोट-लालकुआं स्पेशल प्रत्येक सोमवार को राजकोट से 22.30 बजे प्रस्थान करेगी और बुधवार को 05.15 बजे लालकुआं पहुंचेगी। यह ट्रेन 2 मार्च, 2026 से 30 मार्च, 2026 तक चलेगी।

इसी तरह, ट्रेन संख्या 05045 लालकुआं-राजकोट स्पेशल प्रत्येक रविवार को लालकुआं से 12.35 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन 18.10 बजे राजकोट पहुंचेगी। यह ट्रेन 1 मार्च, 2026 से 29 मार्च, 2026 तक चलेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में वांकानेर, सुरेंद्रनगर, विरमगाम, महेसाणा, पाटन, भीलड़ी, धनेरा, रानीवाड़ा, मारवाड़ भीनमाल, मोदरान, जालोर, मोकलसर, समदड़ी, लूनी, जोधपुर, गोटन, मेड़ता रोड, डेगाना, मकराना, कुचमन सिटी, नावा सिटी, फुलेरा, जयपुर, दौसा, भरतपुर, मथुरा, मथुरा कैंट, हाथरस सिटी, कासगंज, सोरों शुकर, बदायूँ, बरेली, बरेली सिटी, इज्जतनगर, भोजीपुरा, बहेरी और किच्छा स्टेशनों पर रुकेगी।

इस ट्रेन में सेकंड एसी, थर्ड एसी, सेकंड स्लीपर और जनरल क्लास के कोच होंगे।

ट्रेन संख्या 05046 की बुकिंग 13 फरवरी, 2026 से सभी पीआरएस काउंटरों और आईआरसीटीसी की वेबसाइट पर शुरू होगी। ट्रेन के ठहराव, संरचना और समय के बारे में विस्तृत जानकारी के लिए यात्री कृपया www.enquiry.indianrail.gov.in पर जाकर अवलोकन कर सकते हैं।

रांदेर की रात और जागरूकता का सबक

(जीएनएस)। सूरत के रांदेर इलाके में घटी एक अनोखी चोरी की घटना ने शहरवासियों को चौंका दिया। आमतौर पर चोरी की वारदातों में नकदी, गहने या इलेक्ट्रॉनिक सामान को निशाना बनाया जाता है, लेकिन इस बार चोर की नजर महंगे ब्रांडेड जूते-चप्पलों पर थी। यह घटना न केवल असामान्य है, बल्कि शहरी जीवन की बदलती प्रवृत्तियों और सुरक्षा के प्रति हमारी लापरवाही को भी उजागर करती है। रांदेर नवयुग कॉलेज के पास स्थित डिस्ट्रिक्ट पंचायत सोसाइटी में एक ही रात में 48 घरों के बाहर से फुटवियर चोरी हो जाना अपने आप में हैरान करने वाला मामला है।

जानकारी के अनुसार, 9 तारीख की देर रात लगभग 2:30 बजे एक अज्ञात युवक सोसाइटी के पीछे की फेंस कूदकर अंदर दाखिल हुआ। सीसीटीवी फुटेज में साफ दिखाई देता है कि वह अपने साथ एक खाली बैग लेकर आया था, जिससे यह संकेत मिलता है कि वह पहले से योजना बनाकर पहुंचा था। सोसाइटी में लगभग 60 मकान हैं, और चोर ने व्यवस्थित तरीके से एक-एक घर के बाहर रखे जूतों के रैक और बॉक्स की जांच की। यह पूरी घटना करीब एक घंटे तक चलती रही, जिसमें उसने दो बड़े बैग महंगे जूतों से भर लिए और बिना किसी शोर-शराबे के फरार हो गया।

सबसे दिलचस्प और चिंताजनक पहलू यह रहा कि चोर ने केवल ब्रांडेड, नए और महंगे दिखने वाले जूते-चप्पल ही उठाए, जबकि साधारण या पुराने फुटवियर को वहीं छोड़ दिया। इससे स्पष्ट होता है कि उसे बाजार में इन वस्तुओं की संभावित कीमत और मांग का अंदाजा था। संभव है कि चोरी किए गए जूतों को सेकेंड-हैंड बाजार या ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर बेचने की योजना रही हो। यह प्रवृत्ति दर्शाती है कि अब अपराधी भी बदलते उपभोक्ता रुझानों और ब्रांड वैल्यू को समझने लगे हैं। घटना की जानकारी सुबह तब सामने आई, जब सोसाइटी के निवासी रोजमर्रा की गतिविधियों के लिए घर से बाहर निकले। दरवाजे के बाहर रखे जूते गायब देखकर लोग हैरान रह गए। कई परिवारों के लिए यह सिर्फ सामान की चोरी नहीं, बल्कि सुरक्षा व्यवस्था पर सवाल था। जब सीसीटीवी फुटेज खंगाला गया, तो पूरी वारदात का खुलासा हुआ और वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो गया। सोशल मीडिया के माध्यम से यह घटना शहरभर में चर्चा का विषय बन गई।

हालांकि अब तक इस मामले में पुलिस में कोई आधिकारिक शिकायत दर्ज नहीं कराई गई है, लेकिन सोसाइटी के निवासियों में रोष स्पष्ट है। उन्होंने फुटेज साझा कर अन्य सोसाइटी और अपार्टमेंट के लोगों को सतर्क रहने की अपील की है। यह पहल सामुदायिक जागरूकता का सकारात्मक उदाहरण है, क्योंकि कई बार छोटी घटनाओं को नजरअंदाज कर दिया जाता है, जिससे अपराधियों का मनोबल बढ़ सकता है।

वैलेंटाइन वीक में खून से सनी मोहब्बत: देवर की शादी की खबर सुन बौखलाई भाभी ने चाय में जहर घोलकर ली जान, 48 घंटे में दूसरी सनसनीखेज वारदात

(जीएनएस)। रांची। जहां एक ओर वैलेंटाइन वीक प्रेम और रिश्तों के इज़हार का प्रतीक माना जाता है, वहीं झारखंड की राजधानी रांची के ग्रामीण इलाकों से रिश्तों को कलंकित कर देने वाली दो भयावह घटनाएं सामने आई हैं। तमाड़ थाना क्षेत्र के लोधमा गांव में अवैध संबंधों के जाल में उलझी एक महिला ने अपने ही देवर की शादी कहीं और तय होने से नाराज़ होकर उसे मौत के घाट उतार दिया। यह घटना न केवल स्थानीय लोगों बल्कि पूरे इलाके को झकझोर कर रख देने वाली साबित हुई है।

पुलिस के अनुसार मृतक शंकर नायक का अपनी चचेरी भाभी गीता देवी (35) के साथ पिछले लगभग तीन वर्षों से प्रेम संबंध चल रहा था। बताया जाता है कि शंकर के माता-पिता की मृत्यु के बाद घर की जिम्मेदारी काफी हद तक गीता देवी संभालने लगी थी। इसी दौरान दोनों के बीच नजदीकियां बढ़ीं और रिश्ता सामाजिक मर्यादाओं की सीमाएं पार कर गया। गांव में इस संबंध की चर्चा दबे स्वर में होती थी, लेकिन किसी ने खुलकर विरोध नहीं किया।

मामला उस समय उलझ गया जब शंकर ने इस रिश्ते से दूरी बनाकर दूसरी जगह शादी करने का निर्णय लिया। परिजनों के दबाव और सामाजिक प्रतिष्ठा को ध्यान में रखते हुए उसने विवाह के लिए हामी भर दी। जैसे ही यह बात गीता देवी को पता चली, वह बुरी तरह बौखला उठी। पुलिस जांच में सामने आया है कि गीता ने इसे अपने साथ धोखा माना और किसी भी कीमत पर शंकर को दूसरी दुल्हन के साथ देखने को तैयार नहीं थी। इसी आक्रोश में उसने अपने पति बलदेव मछुवा के साथ मिलकर शंकर को रास्ते से हटाने की साजिश रची।

योजना के तहत शंकर को घर बुलाया गया। सामान्य बातचीत के बीच उसे चाय पेश की गई, जिसमें पहले से जहर मिलाया गया था। चाय पीने के कुछ ही समय बाद शंकर की तबीयत बिगड़ने लगी। उसे तत्काल अस्पताल ले जाया गया, लेकिन हालत गंभीर होने पर जमशेदपुर रेफर किया गया, जहां इलाज के दौरान उसने दम तोड़ दिया। प्रारंभ में इसे सामान्य बीमारी समझा जा रहा था, लेकिन परिस्थितियां संदिग्ध लगने पर मृतक के भाई सुकरा नायक ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई।

बुंडू एसडीपीओ के नेतृत्व में गठित विशेष टीम ने मामले की गहन जांच शुरू की। तकनीकी साक्ष्यों, कॉल डिटेल्स और पूछताछ के आधार पर पुलिस ने गीता देवी और उसके पति बलदेव मछुवा को गिरफ्तार कर लिया। शिकायत में उनकी नाबालिग बेटी का नाम भी सामने आया है, जिसकी भूमिका की जांच जारी है। पुलिस अधिकारियों के अनुसार प्रथम दृष्टया मामला पूर्व नियोजित हत्या का प्रतीत होता है और आरोपियों से विस्तृत पूछताछ की जा रही है।

इस घटना ने पूरे इलाके में सनसनी फैला दी है, लेकिन इससे भी अधिक चौंकाने वाली बात यह है कि महज 48 घंटे पहले सोनाहातू थाना क्षेत्र में भी अवैध संबंधों के चलते एक और निर्मम हत्या हुई थी। वहां हरिहर महतो (25) की हत्या उसकी प्रेमिका सुलोचना और उसके पति ने मिलकर कर दी थी। आरोप है कि युवक की हत्या के बाद उसका सिर और निजी अंग काटकर शव नदी किनारे फेंक दिया गया था। पुलिस ने उस मामले में भी आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है।

रांची के ग्रामीण इलाकों में लगातार सामने आ रही इन घटनाओं ने कानून-व्यवस्था और सामाजिक ताने-बाने पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। अवैध संबंधों, भावनात्मक अस्थिरता और सामाजिक दबाव के बीच हिंसा का यह खतरनाक रूप पुलिस और प्रशासन के लिए बड़ी चुनौती बनता जा रहा है। विशेषज्ञों का मानना है कि पारिवारिक संवाद की कमी, सामाजिक भय और व्यक्तिगत स्वार्थ ऐसे अपराधों को जन्म दे रहे हैं।

फिलहाल पुलिस दोनों मामलों की विस्तृत जांच में जुटी है और आरोपियों के खिलाफ सख्त धाराओं में कार्रवाई की जा रही है। लेकिन इन घटनाओं ने यह सोचने पर मजबूर कर दिया है कि प्रेम और विश्वास के नाम पर पनप रहे रिश्ते जब सामाजिक और नैतिक सीमाएं लांघते हैं, तो उनका अंजाम कितना भयावह हो सकता है।

महाशिवरात्रि मेला के अवसर पर यात्रियों की सुविधा हेतु पश्चिम रेलवे द्वारा विशेष किराये पर 04 जोड़ी "महाशिवरात्रि मेला स्पेशल" ट्रेनों का संचालन

(जीएनएस)। महाशिवरात्रि मेला के दौरान होने वाली अतिरिक्त यात्री भीड़ को ध्यान में रखते हुए पश्चिम रेलवे द्वारा यात्रियों की सुविधा के लिए विशेष किराये पर "महाशिवरात्रि मेला स्पेशल" ट्रेनों के संचालन का निर्णय लिया गया है।

भावनगर मंडल के वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री अतुल कुमार त्रिपाठी के अनुसार इन विशेष ट्रेनों का विस्तृत विवरण निम्नानुसार है :

1. राजकोट–वेरावल–राजकोट अनारक्षित दैनिक स्पेशल (09513/09514)

ट्रेन संख्या 09513 राजकोट–वेरावल स्पेशल प्रतिदिन सुबह 06.55 बजे राजकोट से प्रस्थान कर उसी दिन सुबह 10.55 बजे वेरावल पहुंचेगी। इसी प्रकार वापसी में ट्रेन संख्या 09514 वेरावल–राजकोट स्पेशल वेरावल से दोपहर 15.20 बजे प्रस्थान कर रात्रि 20.00 बजे राजकोट पहुंचेगी।

यह ट्रेन दोनों दिशाओं में केशोद, जूनागढ़, जेतलसर, वीरपुर, गोंडल एवं भक्तिनगर स्टेशनों पर ठहराव करेगी। यह ट्रेन 13.02.2026 से 17.02.2026 तक संचालित रहेगी।

2. भावनगर टर्मिनस–वेरावल–भावनगर टर्मिनस अनारक्षित दैनिक स्पेशल (09582/09581)

ट्रेन संख्या 09581 वेरावल–भावनगर टर्मिनस स्पेशल वेरावल से सुबह 06.50 बजे प्रस्थान कर दोपहर 14.00 बजे भावनगर टर्मिनस पहुंचेगी। वापसी में ट्रेन संख्या 09582 भावनगर टर्मिनस–वेरावल स्पेशल भावनगर टर्मिनस से दोपहर 14.50 बजे प्रस्थान कर रात्रि 21.35 बजे वेरावल पहुंचेगी। यह ट्रेन दोनों दिशाओं में केशोद, जूनागढ़, जेतलसर, जेतपुर, कुंकावाव, लाठी, ढसा, धोला, सिहोर एवं भावनगर परा स्टेशनों पर ठहराव करेगी। यह ट्रेन 13.02.2026 से 17.02.2026 तक चलेगी।

3. वेरावल–गांधीग्राम–वेरावल अनारक्षित दैनिक स्पेशल (09584/09583)

ट्रेन संख्या 09584 वेरावल–गांधीग्राम स्पेशल वेरावल से प्रातः 04.00 बजे प्रस्थान कर दोपहर 12.00 बजे गांधीग्राम पहुंचेगी। वापसी में ट्रेन संख्या 09583 गांधीग्राम–वेरावल स्पेशल गांधीग्राम से दोपहर 13.00 बजे प्रस्थान कर रात्रि 21.00 बजे वेरावल पहुंचेगी। यह ट्रेन दोनों दिशाओं में केशोद, जूनागढ़, जेतलसर, जेतपुर, कुंकावाव, लाठी, ढसा, धोला, बोटाद, धंधुका, धोलका एवं बावला स्टेशनों पर ठहराव करेगी। यह ट्रेन 13.02.2026 से 17.02.2026 तक संचालित की जाएगी।

4. वेरावल–जूनागढ़–वेरावल मीटरगेज अनारक्षित दैनिक स्पेशल (09591/09592)

ट्रेन संख्या 09591 वेरावल–जूनागढ़ मीटरगेज स्पेशल वेरावल से सुबह 09.15 बजे प्रस्थान कर दोपहर 13.00 बजे जूनागढ़ पहुंचेगी। वापसी में ट्रेन संख्या 09592 जूनागढ़–वेरावल मीटरगेज स्पेशल जूनागढ़ से दोपहर 13.25 बजे प्रस्थान कर शाम 17.05 बजे वेरावल पहुंचेगी। यह ट्रेन दोनों दिशाओं में सवनी, तालाला जं., चित्रावड, सासण गीर, कांसियानेस, सताधार, विसावदर, जूनीचावंड, बिलखा एवं तोरणिया स्टेशनों पर ठहराव करेगी। यह ट्रेन 13.02.2026 से 17.02.2026 तक संचालित रहेगी। मंडल रेल प्रबंधक श्री दिनेश वर्मा ने यात्रियों से अनुरोध किया है कि वे यात्रा से पूर्व अपनी ट्रेन की समय-सारिणी की पुष्टि कर लें, रेलवे द्वारा जारी किए गए सभी निर्देशों का पालन करें तथा स्टेशन एवं ट्रेनों में स्वच्छता और व्यवस्था बनाए रखने में रेलवे का सहयोग करें।